PKL NO.KKR/184/2024-26
हिन्दी पाक्षिक राष्ट्रीय समाचार पत्र
सच्ची व स्टीक खबर, आप तक

गजब हरियाणा

सम्पादक : जरनैल सिंह
सह संपादिका : सृष्टि देवी
छायाकार : राजरानी

Contact : 91382-03233

HAR/HIN /2018/77311

WWW.GAJABHARYANA.COM ✸ 01 जुलाई 2025 वर्ष : 8, अंक : 07 पृष्ट : 8 मूल्यः 7/- सालाना 150/- रुपये ✸ email. gajabharyananews@gmail.com

ज्ञान विचार

अहंकार मत कीजिए जनाब, वक्त के समुन्दर में कई सिकंदर डूब जाते हैं।

लाडो लक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं के खाते में जमा करवाई जाएगी 2100-2100 रुपए की राशि: नायब सैनी

सरकार ने लाडो लक्ष्मी योजना को अमली जामा पहनाने की तैयार की रचना, बजट में किया 5 हजार करोड़ का प्रावधान

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रदेश सरकार ने लाडो लक्ष्मी योजना को अमलीजामा पहनाने की पूरी तैयारी कर ली है। इस योजना के तहत इसी साल महिलाओं के खातों में 2100-2100 रुपए की राशि जमा करवाई जाएगी। इस योजना के लिए बजट में 5 हजार करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान भी कर लिया है। अहम पहलू यह है कि इस सरकार ने 217 संकल्पों में से पिछले 5 माह में 28 संकल्पों को पूरा कर लिया है और 90 संकल्पों पर कार्य चल रहा है। यह सरकार हर क्षेत्र में तेज गति के साथ विकास कार्य कर रही है और हर व्यक्ति तक योजना का लाभ पहुंचाने का काम कर रही है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बुधवार को देर सायं गांव बण, बहलोलपुर व गांव जालखेडी में आयोजित कार्यक्रमों में लोगों की समस्याएं सुन रहे थे। मुख्यमंत्री ने गांव बण में सरपंच पशविन्द्र कौर द्वारा रखी 7 मांगों, गांव बहलोलपुर में सरपंच नेहा सैनी द्वारा रखी 6 मांगों, जालखेड़ी में सरपंच द्वारा रखी 8 मांगों को विभागों के माध्यम से पूरा करने के साथ-साथ गांव बण, बहलोलपुर, गांव जालखेडी में विकास कार्यों के लिए 21-21 लाख रुपए की अनुदान राशि देने की घोषणा करते हुए कहा कि पिहोवा से यमुनानगर तक फोर लेनिंग की परियोजना को जल्द अमलीजामा पहनाया जाएगा और गांव बहलोलपुर में 65 लाख रुपए की राशि से विकास कार्य जल्द ही शुरू कर दिए जाएंगे।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि जल्द ही प्रदेश सरकार 7500 पदों पर युवाओं को नौकरी का परिणाम घोषित करेगी और इसके अलावा सभी विभागों में खाली पदों का विज्ञापन जारी करके आगामी नौकरी देने की भी योजना बनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय कांग्रेस के लोगों ने कोर्ट में जाकर 26,000 पदों के परिणाम पर रोक लगवा दी थी। तब हमने संकल्प लिया था कि सरकार बनते ही शपथ लेने से पहले युवाओं को उनके नौकरियों का परिणाम घोषित कर ज्वाइन करवाया जाएगा और सरकार ने ऐसा ही किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने प्रदेश में युवाओं को बिना खर्ची बिना पर्ची के मेरिट के आधार पर सरकारी नौकरी दी है और आगे भी इसी नीति से युवाओं को नौकरी दी जाती रहेगी।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रदेश के 10 जिलों में इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप (आईएमटी) बनाने के कार्य को गति से किया जा रहा है। सरकार बनने के बाद प्रदेश के 36 हजार परिवारों को आवास योजना के तहत 151 करोड रुपए डीबीटी के माध्यम से उनके खातों में भेजा है। सरकार का लक्ष्य हर सिर पर छत उपलब्ध करवाने का है। इसके लिए अधिकारियों को वंचित परिवारों के आवेदन करने के लिए रजिस्ट्रेशन भी शुरू किया हुआ है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के समय में जिन लोगों को प्लाट दिए गए थे ऐसे एक लाख परिवारों को 100-100 गज के प्लाट की रजिस्ट्री और कब्जा हमारी सरकार ने दिया है। प्रदेश की 17 लाख महिलाओं को 500 रुपए में सिलेंडर मिल रहा है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि चुनावी घोषणाओं को पूरा करते हुए सरकार बनते ही सबसे पहले किडनी के मरीजों का डायलिसिस फ्री में करवाना शुरू किया। उन्होंने कहा कि जिन ग्रामीणों ने पंचायत की जमीन पर वर्ष 2004 से पहले कब्जा किया हुआ है, वो सरकार द्वारा बनाए गए एक्ट के तहत वर्ष 2004 के कलेक्टर रेट पर पंचायती जमीन की भूमि को अपने नाम करवा सकते हैं। इससे लोगों के कोर्ट कचहरी में लगने वाले चक्कर खत्म होंगे।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के लोगों ने किसानों को एमएसपी के नाम पर भ्रमित करने का प्रयास किया। कांग्रेस ने 55 वर्ष में जितना एमएसपी दिया है। भाजपा सरकार ने 11 साल में उससे कई गुना ज्यादा एमएसपी देने का काम किया है। प्रदेश में सबसे पहले हरियाणा सरकार ने सभी 24 फसलों पर एमएसपी के तहत खरीद शुरू की। फसलों के खराब होने पर मुआवजा भी अति शीघ्र किसानों के खातों में पहुंचाया जाता है। सब्जी की फसलों के लिए भावांतर भरपाई योजना बनाकर किसानों का लाभ पहुंचाया जा रहा है। इस मौके पर मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी, उपायुक्त नेहा सिंह, पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल, मुख्यमंत्री के मीडिया कोऑर्डिनेटर तुषार सैनी, भाजपा जिला अध्यक्ष तिजेंदर सिंह गोल्डी, चेयरमैन धर्मवीर मिर्जापुर, मंडल अध्यक्ष विकास शर्मा, मंडल अध्यक्ष नरेंद्र सिंह, मंडल अध्यक्ष शिव गुप्ता, जगदीश कश्यप सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

बटोत में सतगुरु रविदास महाराज का 648वां प्रकाशोत्सव

भक्ति, योग और सामाजिक समरसता का दिव्य संगम, उमड़ा जनसैलाब

भक्त और भगवान में कोई भेद नहीं: स्वामी गुरदीप गिरी जी

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

जम्मू-कश्मीर, जम्मू-कश्मीर के बटोत में शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज जी का 648वां प्रकाशोत्सव इस वर्ष अभूतपूर्व श्रद्धा, उत्साह और भव्यता के साथ मनाया गया। श्री गुरु रविदास जी मेडिटेशन सेंटर, बटोत द्वारा आयोजित तीन दिवसीय इस भव्य समारोह ने पूरे क्षेत्र को भक्तिमय कर दिया। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिक जागरण का केंद्र रहा, बल्कि इसने भक्ति, आस्था, योग और सामाजिक समरसता का एक अद्भुत संगम प्रस्तुत किया, जिसने देश के कोने-कोने से आए हजारों श्रद्धालुओं को एक सूत्र में पिरो दिया।

ऐतिहासिक शोभा यात्रा: एकता और आस्था का प्रतीक

प्रकाशोत्सव का सबसे प्रमुख आकर्षण स्वामी गुरदीप गिरी महाराज जी (गद्दी नशीन, स्वामी जगतगिरी आश्रम, पठानकोट) की अगुवाई में निकाली गई विशाल और भव्य शोभा यात्रा रही। बटोत की सड़कों पर 'जो बोले सो निर्भय, सतगुरु रविदास महाराज की जय' के जयकारों से पूरा वातावरण गूंज उठा। इस पवित्र यात्रा में शामिल होने के लिए न केवल जम्मू-कश्मीर बल्कि पंजाब, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, हिमाचल और दिल्ली जैसे विभिन्न राज्यों से हजारों की संख्या में श्रद्धालु उमड़ पड़े। उनकी आंखों में गुरु महाराज के प्रति अटूट श्रद्धा और मुख पर

असीम उत्साह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। यात्रा के दौरान विभिन्न झांकियां गुरु महाराज के जीवन और शिक्षाओं को दर्शा रही थीं, वहीं कीर्तन मंडलियां गुरु महाराज जी की महिमा का गुणगान कर रही थीं, जिससे पूरा माहौल भक्ति और दिव्यता से ओत-प्रोत हो गया। यह शोभा यात्रा मात्र एक धार्मिक शोभा वो नहीं थी, बल्कि यह विभिन्न समुदायों और राज्यों के लोगों के बीच एकता और भाईचारे का एक सशक्त प्रतीक बन गई।

योग साधना शिविर - स्वस्थ शरीर में निर्मल मन का वास

इस तीन दिवसीय प्रकाशोत्सव समारोह के दौरान ग्लोबल रविदासिया वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन द्वारा एक विशेष योग साधना शिविर का भी आयोजन किया गया, जो श्रद्धालुओं के लिए शारीरिक और मानसिक कल्याण का एक महत्वपूर्ण स्रोत साबित हुआ। योगाचार्य पिंकी अत्री और संजय अत्री ने शिविर में उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए योग और साधना के गहरे संबंध पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने समझाया कि 'स्वस्थ शरीर में ही निर्मल मन का वास होता है' और सच्ची साधना के लिए तन व मन दोनों का संतुलित और स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। योगाचार्यों ने श्रद्धालुओं को विभिन्न महत्वपूर्ण योगासनों और प्राणायामों का अभ्यास भी कराया, जिससे सभी को शारीरिक स्फूर्ति और मानसिक शांति का अनुभव हुआ। इस सत्र ने प्रतिभागियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और आंतरिक शांति प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

स्वामी गुरदीप गिरी जी की अमृतवाणी - जीवन के मार्गदर्शक सिद्धांत

साधना शिविर के दूसरे दिन, शोभा यात्रा के सफलतापूर्वक संपन्न होने के पश्चात, स्वामी गुरदीप गिरी महाराज जी ने अपनी अमृत वर्षा से संगत को निहाल किया। उन्होंने शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज जी की पवित्र अमृतवाणी 'तोही मोहि, मोहि तोही अंतर कैसा। ... जोपे हम ना पाप क्रन्ता, अहे अनंता पतित पावन नाम कैसे हूंता।' की गहन और मर्मस्पर्शी व्याख्या की। स्वामी जी ने समझाया कि भक्त और भगवान में कोई भेद नहीं है, वे एक दूसरे में वैसे ही समाए हैं जैसे सोना और सोने से बने गहनों में कोई अंतर नहीं होता। उन्होंने आगे फरमाया कि यदि संसार में पापी या पतित प्राणी न होते तो अनंत परमात्मा का %पतित-पावन% (पतितों को पवित्र करने वाला) नाम सार्थक कैसे होता? इस वाणी के माध्यम से उन्होंने ईश्वर की असीम कृपा, क्षमाशीलता और हर प्राणी को अपनाने के गुण पर प्रकाश डाला।

इसके अतिरिक्त, स्वामी गुरदीप गिरी महाराज जी ने श्रद्धालुओं को नशों से दूर रहने, घरों में प्रेम और सौहार्द बनाए रखने, ईमानदारी से किरत (मेहनत) करने और नियमित रूप से योग साधना करने का आह्वान किया। उन्होंने जोर दिया कि योग साधना से शरीर तंदुरुस्त और निरोग रहता है, और ये सिद्धांत हमें बुराइयों से बचाते हुए सबकी मदद करने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्वामी गुरदीप गिरी जी ने सामाजिक समरसता और भाईचारे का एक सशक्त और अविस्मरणीय संदेश दिया

कुरुक्षेत्र, रोहतक और हिसार से पहुंचे श्रद्धालुओं में कुरुक्षेत्र से नौरंग राम, डॉ जरनैल सिंह रंगा, सुभाष कटारिया, मदन लाल, राजेंद्र कुमार,प्रशांत, पीयूष, सुरेश कुमार,बिमला देवी, रीटा सोलखे, राज रानी, बिमला, संतोष, अम्बाला से फकीर चन्द,सरोज बाला, सुखबीर कौर, रोहतक से एडवोकेट जोगिंद्र सिंह, हिसार से राजेश राठी आदि ने संयुक्त रूप से कहा कि इस पावन अवसर पर देश के कोने - कोने से भारी संख्या में श्रद्धालू पहुंचे। जिन्होंने स्वामी जी के मुख से निकली अमृतवाणी का पान किया और सत्संग का भरपूर आनंद लिया।

यह तीन दिवसीय साधना शिविर और धार्मिक समागम न केवल स्वस्थ जीवनशैली और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक रहा, बल्कि इसने विभिन्न राज्यों के लोगों को एक साथ लाकर सामाजिक समरसता और भाईचारे का एक सशक्त और अविस्मरणीय संदेश भी दिया। यह आयोजन वास्तव में भक्ति, योग और एकता का एक अनूठा और प्रेरणादायक संगम साबित हुआ, जिसने बटोत की धरती पर आध्यात्मिकता की एक नई लौ प्रज्वलित की।

एनीमिया एलिमिनेशन माह के रूप में मनाया जाएगा जुलाई माह, टी4-टेस्ट, ट्रीट, टॉक एवं ट्रैक की रणनीति का किया जाएगा उपयोग : सिविल सर्जन

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र

करनाल, सिविल सर्जन पूनम चौधरी ने बताया कि एनीमिया मुक्त हरियाणा कार्यक्रम के अंतर्गत जुलाई माह को एनीमिया एलिमिनेशन माह के रूप में मनाया जाएगा। इस अभियान के तहत लोगों में खून की जांच कर एनीमिया का पता लगाकर उनका इलाज किया जाएगा, उनको खानपान के बारे में बताया जाएगा व उचित समय पर दोबारा टेस्ट करके पता किया जाएगा कि उनमें एनीमिया ठीक हुआ है या नहीं।

सिविल सर्जन डॉक्टर पूनम चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के सुचारू कार्यान्वयन के लिए जिले के सभी वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी व चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों के साथ वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से इस कार्यक्रम के बारे में जानकारी साझा की गई। उन्होंने बताया कि एनीमिया एक गंभीर समस्या है जिसका समय रहते उपचार नहीं करवाया गया तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। एनीमिया जिसे आम भाषा में खून की कमी भी कहते हैं के बचाव के लिए आईएफए की खुराक लाभदायक होती है। एनीमिया के रोगी को आयु अनुसार आयरन फोलिक एसिड की खुराक दी जाती है।

उन्होंने बताया कि मार्च 2019 में एनीमिया मुक्त भारत के अंतर्गत हरियाणा में अटल अभियान की शुरुआत की गई थी जिसका उद्देश्य एनीमिया को खत्म करना है। इसके अंतर्गत हरियाणा राज्य में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है जैसे एनीमिया एलिमिनेशन सप्ताह, 100 दिनों का अभियान इत्यादि । इन सब कार्यक्रमों से एनीमिया को कम तो कर पाए हैं परंतु पूर्ण रूप से खत्म नहीं कर पाए हैं। इसी को ध्यान रखते हुए जुलाई माह को एनीमिया एलिमिनेशन महीने के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत टी4 रणनीति का उपयोग किया जाएगा जिसका मतलब है टेस्ट, ट्रीट, टॉक एवं ट्रैक। कार्यक्रम के तहत जिले भर के सभी स्वास्थ्य संस्थानों में मरीजों में खून की कमी की जांच की जाएगी व ऐसे सभी रोगी जिनमें एनीमिया पाया जाएगा उनको आयरन फोलिक एसिड सप्लीमेंटेशन के माध्यम से ठीक किया जाएगा व अति गंभीर एनीमिया रोगियों को जिला नागरिक अस्पताल में रेफर करके विशेषज्ञ की निगरानी में अन्य टेस्ट व इलाज करवाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत लाभार्थियों को 6 वर्गों में चिन्हित किया जाता है- 6 माह से 59 महीने के बच्चे, 5 वर्ष से 9 वर्ष के बच्चे, 10 से 19 वर्ष के किशोर व किशोरी, गर्भवती महिलाएं, ऐसी महिलाएं जो रिप्रोडक्टिव उम्र में है व ऐसी माताएं जो बच्चों को दूध पिलाती हैं। एनीमिया मुक्त रहने के लिए सभी आयु वर्ग को आयरन, प्रोटीन, विटामिन सी युक्त आहार का सेवन रोजाना करना चाहिए। यह सब हमें अनाज, फलों, सब्जियों, दालों व अन्य खाद्य पदार्थ जैसे कि किशमिश, बादाम, खजूर, मूंगफली, अंडा इत्यादि से मिलते हैं।

उप सिविल सर्जन डॉक्टर शशि गर्ग ने बताया कि एनीमिया की वजह से जल्दी थकान होना, सांस फूलना, सुस्ती व नींद आते रहना, जल्दी-जल्दी बीमार पड़ना, पढ़ाई खेल व अन्य कार्यों में मन नहीं लगना, भूख न लगना आदि लक्षण हो सकते हैं। आयरन फोलिक एसिड की खुराक देने से ऐसे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास बढ़ता है, शरीर स्वस्थ रहता है, पढ़ाई और अन्य कार्यों में मन लगता है, बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है और एनीमिया की रोकथाम में मदद मिलती है।

कैथल एडीसी ने तैराकों की टीम के साथ इंग्लिश चैनल किया पार

गजब हरियाणा न्यूज

कैथल,व्यक्ति के अंदर कुछ करने का जज्बा और जुनून हो तो कठिन से कठिन लक्ष्य भी हासिल किया जा सकता है। इस बात को साबित कर दिखाया है कैथल में एडीसी के पद पर तैनात दीपक बाबू लाल करवा व उनकी टीम ने। इस अभियान के तहत टीम ने इंग्लैंड से फ्रांस तक समुद्र के 12 डिग्री ठंडे पानी में करीब 47 किलोमीटर लंबे इंग्लिश चैनल को रिले तैराकी करके सफलतापूर्वक पार किया। एडीसी दीपक बाबू लाल करवा ने बताया कि प्राइड ऑफ इंडिया नाम से दो टीम बनाई गई। जिसमें देश भर से कुल 12 तैराक शामिल हुए। वे पांच जून को केंटरबरी यूके पहुंच गए थे। उन्होंने दो टीमों मे अलग अलग तारीख में अभियान शुरू किया। उनकी छह सदस्यों की टीम 16 जून को समुद्र में उतरी और करीब साढ़े 13 घंटे में चैनल को पार कर दिया। वहीँ दूसरी टीम ने 18 जून को अभियान शुरू किया और 11 घंटे 19 मिनट मे चैनल पार किया। टीम में उतर प्रदेश से आईएएस अभिनव गोपाल, हरियाणा के चरखी दादरी से ईशांत सिंह व महेंद्रगढ़ के गांव बाघोत गांव से राजबीर सिंह, कर्नाटक से अमन शानबाग व मुरीगेप्पा रावसब चन्नानवर, महाराष्ट्र से मानव मोरे, आयुषी कैलाश अखाड़े, आयुष प्रवीण तावड़े तथा श्रुति विनायक कानाडे, आंध्र प्रदेश से गणेश चालागा तथा पश्चिम बंगाल से राबिन बोडले शामिल रहे। एडीसी दीपक बाबू लाल करवा ने कहा कि इंग्लिश चैनल को पार करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। इस रिले तैराकी की एक टीम में छह-छह तैराक शामिल रहे। इससे पहले उन्होंने श्रीलंका और भारत को जोड़ने वाली पाक जलडमरूमध्य में रामसेतु के साथ साथ 28 किलोमीटर रिले तैराकी सफलतापूर्वक पूरी की थी।

अंबेडकर की मूल प्रस्तावना में नहीं थे 'धर्मनिरपेक्षता' और 'समाजवाद', बदलावों की हो समीक्षा

दिल्ली, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्दों की समीक्षा करने का आह्वान करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि इन्हें आपातकाल के दौरान शामिल किया गया था और ये कभी भी बीआर आंबेडकर द्वारा तैयार संविधान का हिस्सा नहीं थे।

आपातकाल पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आरएसएस महासचिव दत्तात्रेय होसबाले ने कहा, ''बाबा साहेब आंबेडकर ने जो संविधान बनाया, उसकी प्रस्तावना में ये शब्द कभी नहीं थे। आपातकाल के दौरान जब मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए, संसद काम नहीं कर रही थी, न्यायपालिका पंगु हो गई थी, तब ये शब्द जोड़े गए। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर बाद में चर्चा हुई लेकिन प्रस्तावना से उन्हें हटाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। होसबाले ने कहा, ''इसलिए उन्हें प्रस्तावना में रहना चाहिए या नहीं, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

होसबोले ने कहा, प्रस्तावना शाश्वत है। क्या समाजवाद के विचार भारत के लिए एक विचारधारा के रूप में शाश्वत हैं? वरिष्ठ आरएसएस पदाधिकारी ने दोनों शब्दों को हटाने पर विचार करने का सुझाव ऐसे समय दिया जब उन्होंने कांग्रेस पर आपातकाल के दौर की ज्यादतियों के लिए निशाना साधा और पार्टी से माफी की मांग की। पच्चीस जून 1975 को घोषित आपातकाल के दिनों को याद करते हुए होसबाले ने कहा कि उस दौरान हजारों लोगों को जेल में डाल दिया गया और उन पर अत्याचार किया गया, वहीं न्यायपालिका और मीडिया की स्वतंत्रता पर भी अंकुश लगाया गया। आरएसएस नेता ने कहा कि आपातकाल के दिनों में बड़े पैमाने पर जबरन नसबंदी भी की गई। उन्होंने कहा, ''जिन लोगों ने ऐसी चीजें कीं, वे आज संविधान की प्रति लेकर घूम रहे हैं। उन्होंने अभी तक माफी नहीं मांगी है...वे माफी मांगें।

कांग्रेस पर हमला करते हुए होसबाले ने कहा, ''आपके पूर्वजों ने ऐसा किया... आपको इसके लिए देश से माफी मांगनी चाहिए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने 50 साल पहले इंदिरा गांधी नीत सरकार द्वारा आपातकाल लगाए जाने को लेकर कांग्रेस की आलोचना की और कहा कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा 21 महीने के आपातकाल के दौरान किए गए अत्याचारों को कभी नहीं भुलाया जा सकता। उन्होंने कहा, ''अपनी कुर्सी बचाने और लोगों की आवाज दबाने के लिए तत्कालीन

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 25 जून 1975 को आपातकाल लगाने की घोषणा की और संविधान की भावना को कुचल दिया। गडकरी ने कहा कि आपातकाल के दौरान संविधान में कई संशोधन किए गए और संविधान की धज्जियां उड़ाई गईं।

उन्होंने आरोप लगाया, कांग्रेस नेताओं ने हमारे खिलाफ अभियान चलाया (आरोप लगाया) कि हम संविधान बदल देंगे। हमने न तो कभी संविधान बदलने की बात की और न ही ऐसा करने की हमारी कोई इच्छा है। अगर किसी ने संविधान का उल्लंघन करने का सबसे बड़ा पाप किया, तो वह इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस थी।

सविता अम्बेडकर वो महिला जिनके लिए बाबा साहब ने लिखा उन्होंने मेरी उम्र 10 साल बढ़ा दी

बाबा साहेब भीमराव डॉ. अंबेडकर ने अपनी किताब 'द बुद्धा एंड हिज धम्मा' की भूमिका में एक महिला की तारीफ करते हुए लिखा, उन्होंने मेरी उम्र कम से कम 10 साल और बढ़ा दी। इस महिला पर बाद में अंबेडकरवादियों ने आरोप लगाया कि उनके नेता का निधन हत्या की, जिसके लिए ये महिला जिम्मेवार है। केंद्र सरकार ने जांच कराई और इस महिला को क्लीन चिट दे दी गई। दरअसल ये महिला अंबेडकर के जीवन का सबसे अहम हिस्सा बनी थीं। बाद में कांग्रेस ने उन्हें राज्यसभा सदस्यता का भी न्योता दिया लेकिन उन्होंने विनम्रता से अस्वीकार कर दिया। ये महिला थीं डॉक्टर सविता भीमराव अंबेडकर। विवाह पूर्व उनका नाम शारदा कबीर था लेकिन विवाह के बाद उनका नाम सविता अम्बेडकर हो गया। जिनका जन्म महाराष्ट्र के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वो डॉक्टर थीं। बाबा साहेब की दूसरी पत्नी बनीं। जिस समय अंबेडकर ने उनसे शादी की, उनके परिवारजन ही नहीं बल्कि बहुत से अनुयायी भी खासे नाराज हुए। अंबेडकरवादियों को समझ में नहीं आया कि जिन सवर्ण जातियों के खिलाफ बाबा साहेब ने लगातार संघर्ष का बिगुल बजाया, उसी वर्ग की महिला से क्यों शादी कर ली। सविता उस दिन अंबेडकर के साथ दिल्ली में थीं, जब उनका निधन हुआ। दरअसल दिन में सबकुछ ठीक था। बाबा साहेब शाम को कुछ मुलाकातियों से मिले। फिर उन्हें सिरदर्द की शिकायत हुई। उन्होंने सहायक से सिर दबवाया था। सोने से पहले पसंदीदा गीत गुनगुनाया। सोते समय किताब पढ़ी। सुबह बिस्तर पर मृत मिले। रात में ही हार्ट अटैक से उनका निधन हो गया था। उनके इस निधन को अंबेडकर को मानने वाले एक वर्ग ने संदेह की नजरों से देखा। उन्होंने आरोप लगाया कि ये निधन स्वाभाविक नहीं बल्कि साजिश का नतीजा है। सविता माई ने जब बाबा साहेब से शादी की तो वो उनके साथ उस आंदोलन में जोर-शोर से कूद पड़ी थीं, जिसे वे लंबे समय से चला रहे थे। वे सामाजिक कार्यकर्ता थीं, होनहार डॉक्टर थीं। बाबा साहब के साथ बौद्ध धर्म भी अपनाया था। अंबेडकर के अनुयायी और बौद्धिस्ट उन्हें माई या मेम साहब कहते थे। वैसे अंबेडकर ने तमाम किताबें लिखीं लेकिन जब वो 'द बुद्धा एंड हिज धम्मा' लिख रहे थे तो भूमिका में उन्होंने खासतौर पर माई साहेब सविता का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि किस तरह से केवल उनके कारण उनकी जिंदगी के 08-10 साल बढ़े हैं। सविता मुंबई में मराठी ब्राह्मण परिवार में 27 जनवरी 1909 को पैदा हुई थी। तब बहुत कम महिलाएं पढाई करती थीं। ऐसे में उनका ना केवल पढाई करना बल्कि डॉक्टरी की पढाई करना असाधारण ही कहा जाएगा। आजादी से पहले के दशकों में एमबीबीएस करना बहुत बड़ी बात थी। सविता मेघावी स्टूडेंट थीं। उन्होंने मुंबई के ग्रांट मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस किया। उनका परिवार महाराष्ट्र के रत्नागिरी के एक गांव से ताल्लुक रखता था। उनका परिवार शायद आधुनिक विचारों का था। आठ भाई-बहनों में छह ने अंतरजातीय विवाह किया था। सविता ने खुद 'डॉ. अम्बेडकरच्या सहवासत' शीर्षक से आत्मकथा में लिखी, हम भाई-बहनों के अंतरजातीय विवाह करने पर हमारे परिवार ने कोई विरोध नहीं किया। इसका कारण था कि पूरा परिवार सुशिक्षित और प्रगतिशील था। 1947 आते-आते डॉ. अंबेडकर की तबियत खराब रहने लगे थी। सविता ही उनका इलाज कर रही थीं। उन्होंने अंबेडकर का स्वास्थ्य बेहतर करने में काफी काम किया। लोकवामय गृह प्रकाशन, मुम्बई से प्रकाशित पुस्तक डॉ. बाबा साहेब में कहा गया कि 16 मार्च, 1948 को दादा साहब गायकवाड़ को लिखे पत्र में अंबेडकर ने कहा, सेवा-टहल के लिए किसी नर्स या घर संभालने के लिए किसी महिला को रखने पर लोगों के मन मे शंकाएं पैदा होंगी। इसलिए शादी कर लेना ही सबसे उचित रास्ता रहेगा। मैने पहली पत्नी के निधन के बाद शादी नहीं करने का निश्चय किया था लेकिन अब जो स्थितियां हैं, उसमें मुझको अपना निश्चय छोड़ना होगा।

15 अप्रैल 1948 को डॉ अंबेडकर का विवाह उनके दिल्ली स्थित घर पर डॉ. शारदा कबीर से हुआ। तब बाबा साहेब हार्डिंग एवेन्यू (अब तिलक मार्ग) में तब बाबा साहेब कानून मंत्री के रूप में रहते थे। शादी के लिए रजिस्ट्रार के तौर पर रामेश्वर दयाल डिप्टी कमिश्नर दिल्ली बुलाए गए। यह विवाह सिविल मैरिज एक्ट के अधीन सिविल मैरिज के तौर पर सम्पन्न हुआ। इस मौके पर सविता के परिजनों, बाबा साहेब के मित्रों समेत कई लोग मौजूद थे।

शादी के बाद सविता पर क्या आरोप लगते थे ?

शादी के बाद बहुत से लोगों की शिकायत ये रहने लगी कि अब डॉ. अंबेडकर से मुलाकात करना मुश्किल हो गया है। डॉक्टर सविता खुद तय करती हैं कि कौन उनसे मिलेगा और कौन नहीं। उनकी ब्राह्मण जाति भी अंबेडकर के अनुयायियों को नाराज करती थी। डॉ. सविता अंबेडकर पर बाद में कई किताबें लिखी गईं, जिनमें कहा गया कि उन्होंने ना केवल पत्नी बल्कि अंबेडकर के डॉक्टर की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई। डॉ. सविता एक डॉक्टर के रूप में बाबा साहेब के स्वास्थ्य व आराम का पूरा ध्यान रखती थी।

डॉ. अंबेडकर के निधन के बाद

निधन के बाद सविता दिल्ली में ही एक फॉर्म हाउस में रहने लगीं। अंबेडकर के परिजनों से उनके रिश्ते हमेशा से ही तनाव भरे थे। ऊपर से उसी पक्ष की ओर से उन पर अंबेडकर के निधन को लेकर लापरवाही का आरोप लगाया गया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने अंबेडकर अनुयायियों के भारी दबाव के बीच जांच बिठाई लेकिन जांच में निष्कर्ष निकला कि ये एक नेचुरल डेथ थी।

राज्यसभा में आने का भी ऑफर मिला

बाद में जवाहर लाल नेहरू और फिर इंदिरा गांधी दोनों ने उन्हें राज्यसभा में आने का न्योता दिया लेकिन उन्होंने इसे विनम्रता से मना कर दिया। हालांकि जब भारत सरकार ने अंबेडकर को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया तो 14 अप्रैल 1990 के दिन यह सम्मान डॉ. आंबेडकर की पत्नी की हैसियत से उन्होंने अम्बेडकर स्टेडियम में आयोजित अम्बेडकर जयंती पर प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह से ग्रहण किया। दिल्ली में अंबेडकर को लेकर होने वाली कई गतिविधियों में वह सक्रिय रहती थीं। हालांकि उन्होंने खुद को सियासी गतिविधियों से काट रखा था लेकिन बाद में मुंबई जाकर उन्होंने सियासी तौर पर सक्रिय होने की कोशिश की।

नेहरू ने बड़ी नौकरी देने का भी प्रस्ताव दिया था

सविता अंबेडकर ने 'डॉ. अम्बेडकरच्या सहवासत' शीर्षक से आत्मकथा लिखी। ये मराठी में प्रकाशित हुई। फिर इसका हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ। उसमें उन्होंने लिखा, ''डॉ. अंबेडकर के परिनिर्वाण के बाद मुझे प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने सरकारी अस्पताल में मेडिकल ऑफिसर की नौकरी देने तथा राज्यसभा में लेने की बात कही थी, लेकिन मैंने स्वेच्छा से मना कर दिया।'' कारण था कि बाबा साहेब ने मुझे किसी तरह की नौकरी से अलग रहने के लिए कहा था। फिर राज्यसभा की सदस्यता को स्वीकार करना कांग्रेस की मर्जी से चलने के लिए अपने आप को तैयार करना था, जो मैं नहीं चाहती थी। ये सब स्वीकार करना बाबा साहेब के विचारों के विरुद्ध जाना था।

उन्होंने आगे लिखा, ''मुझे साहेब ने स्वीकार किया। मैं अंबेडकर मयी हो गई। मैंने उनका हमेशा साथ दिया। बीते 36 सालों से विधवा का जीवन जी रही हूँ, वह भी अंबेडकर के नाम के साथ। मैं अंबेडकर के नाम के साथ जी रही हूं और मरूंगी भी तो इसी नाम के साथ।''19 अप्रैल, 2003 को को मुबई के जे. जे. हॉस्पिटल में खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें भर्ती कराया गया। 29 मई, 2003 को उनका निधन हो गया।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का त्यागपत्र भाषण

हममें से ज़्यादातर लोग डॉ. बी.आर. अंबेडकर और गांधी जी के बीच वैचारिक मतभेदों के बारे में जानते हैं। लेकिन बहुत कम लोग जानते होंगे कि डॉ. अंबेडकर और भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बीच किस तरह के मतभेद थे।

तथाकथित आधुनिकतावादी पंडित नेहरू भारत की स्वतंत्रता के बाद इतने रूढ़िवादी हो गए थे – या वे जीवन भर रूढ़िवादी रहे कि डॉ. अंबेडकर उनके सहयात्री नहीं रह सके और उन्हें 27 सितंबर, 1951 को अपने मंत्रिमंडल से इस्तीफा देना पड़ा। डॉ. अंबेडकर के इस्तीफे पर दिए गए भाषण का पूरा पाठ यहां प्रस्तुत है।

त्यागपत्र भाषण का मूल पाठ

मुझे पूरा यकीन है कि सदन को, आधिकारिक तौर पर नहीं तो अनौपचारिक रूप से, पता है कि मैं मंत्रिमंडल का सदस्य नहीं रहा। मैंने गुरुवार, 27 सितंबर को प्रधानमंत्री को अपना इस्तीफा सौंप दिया और उनसे मुझे तुरंत कार्यमुक्त करने का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री ने अगले ही दिन इसे स्वीकार कर लिया। अगर मैं शुक्रवार, 28 तारीख के बाद भी मंत्री बना रहा, तो ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि प्रधानमंत्री ने मुझसे सत्र के अंत तक बने रहने का अनुरोध किया था – एक ऐसा अनुरोध जिसे मैं संवैधानिक परंपरा के अनुसार स्वीकार करने के लिए बाध्य था।

हमारे प्रक्रिया नियम किसी मंत्री को अपने पद से इस्तीफा देने पर स्पष्टीकरण के तौर पर व्यक्तिगत बयान देने की अनुमति देते हैं। मेरे कार्यकाल के दौरान कैबिनेट के कई सदस्यों ने इस्तीफा दिया है। हालांकि, इस्तीफा देने वाले मंत्रियों के बयान देने के मामले में कोई समान प्रथा नहीं रही है। कुछ बिना बयान दिए चले गए और कुछ बयान देने के बाद चले गए। कुछ दिनों तक मैं असमंजस में रहा कि क्या करूं। सभी परिस्थितियों पर विचार करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि बयान देना न केवल आवश्यक था, बल्कि यह एक कर्तव्य भी था जो इस्तीफा देने वाले सदस्य का सदन के प्रति होता है।

सदन को यह जानने का कोई अवसर नहीं मिलता कि मंत्रिमंडल अंदर से कैसे काम करता है, क्या सामंजस्य है या कोई संघर्ष है, इसका सीधा सा कारण यह है कि एक संयुक्त जिम्मेदारी है जिसके तहत अल्पमत में रहने वाला सदस्य अपने मतभेदों को प्रकट करने का हकदार नहीं है। नतीजतन, सदन यह सोचता रहता है कि मंत्रिमंडल के सदस्यों के बीच कोई संघर्ष नहीं है, भले ही वास्तव में संघर्ष मौजूद हो। इसलिए, सेवानिवृत्त होने वाले मंत्री का यह कर्तव्य है कि वह सदन को यह बताते हुए बयान दें कि वह क्यों जाना चाहता है और वह आगे संयुक्त जिम्मेदारी क्यों नहीं ले पा रहा है।

दूसरा, अगर कोई मंत्री बिना बयान दिए चला जाता है, तो लोगों को संदेह हो सकता है कि मंत्री के आचरण में कुछ गड़बड़ है, चाहे वह सार्वजनिक रूप से हो या निजी तौर पर। मेरा मानना है कि किसी भी मंत्री को इस तरह के संदेह के लिए जगह नहीं छोड़नी चाहिए और बयान देना ही एकमात्र सुरक्षित रास्ता है।

तीसरा, हमारे पास हमारे समाचार पत्र हैं। उनमें कुछ लोगों के पक्ष में और कुछ के खिलाफ़ पूर्वाग्रह है। उनके निर्णय शायद ही कभी योग्यता के आधार पर होते हैं। जब भी उन्हें कोई खाली जगह मिलती है, तो वे इस्तीफ़े के लिए आधार बताकर उस खाली जगह को भरने की कोशिश करते हैं, जो वास्तविक आधार नहीं होते, बल्कि वे जिनके पक्ष में हैं उन्हें बेहतर रोशनी में दिखाते हैं और जो उनके पक्ष में नहीं हैं उन्हें खराब रोशनी में दिखाते हैं। मैंने देखा है कि मेरे मामले में भी कुछ ऐसा ही हुआ है।

इन्हीं कारणों से मैंने बाहर जाने से पहले एक बयान देने का निर्णय लिया।

प्रधानमंत्री द्वारा मुझे अपने मंत्रिमंडल में विधि मंत्री का पद स्वीकार करने के लिए बुलाए जाने के बाद से अब 4 वर्ष, 1 महीना और 26 दिन बीत चुके हैं। यह प्रस्ताव मेरे लिए बहुत ही आश्चर्यजनक था। मैं विपरीत खेमे में था और अगस्त 1946 में जब अंतरिम सरकार बनी थी, तब मुझे पहले ही सहयोग के अयोग्य घोषित कर दिया गया था। मैं यह अनुमान लगाने के लिए छोड़ दिया गया था कि प्रधानमंत्री के रवैये में यह परिवर्तन लाने के लिए क्या हुआ होगा। मुझे संदेह था। मुझे नहीं पता था कि मैं उन लोगों के साथ कैसे पेश आ सकता हूँ जो कभी मेरे मित्र नहीं रहे। मुझे संदेह था कि क्या मैं एक विधि सदस्य के रूप में कानूनी ज्ञान और कुशाग्रता के उस स्तर को बनाए रख सकता हूँ जो भारत सरकार के विधि मंत्रियों के रूप में मुझसे पहले के लोगों द्वारा बनाए रखा गया था। लेकिन मैंने अपने संदेहों को दूर रखा और प्रधानमंत्री के प्रस्ताव को इस आधार पर स्वीकार कर लिया कि मुझे हमारे राष्ट्र के निर्माण में सहयोग के लिए मना नहीं करना चाहिए। मंत्रिमंडल के सदस्य और विधि मंत्री के रूप में मेरे प्रदर्शन की गुणवत्ता, मुझे इसे दूसरों पर छोड़ना चाहिए।

अब मैं उन मामलों का ज़िक्र करूँगा जिनके कारण मुझे अपने सहकर्मियों से संपर्क तोड़ना पड़ा। कई कारणों से लंबे समय से मेरे अंदर अपने सहकर्मियों से मिलने की इच्छा बढ़ती जा रही थी।

मैं सबसे पहले उन मामलों का जिक्र करूंगा जो पूरी तरह से व्यक्तिगत प्रकृति के हैं और जिनके कारण मुझे इस्तीफा देना पड़ा। वायसराय की कार्यकारी परिषद का सदस्य होने के कारण मैं जानता था कि कानून मंत्रालय प्रशासनिक दृष्टि से महत्वहीन है। इससे भारत सरकार की नीति को आकार देने का कोई अवसर नहीं मिलता। हम इसे खाली साबुनदान कहते थे जो केवल पुराने वकीलों के खेलने के लिए अच्छा था। जब प्रधानमंत्री ने मुझे प्रस्ताव दिया तो मैंने उनसे कहा कि मैं अपनी शिक्षा और अनुभव के कारण वकील होने के अलावा किसी भी प्रशासनिक विभाग को चलाने में सक्षम हूं और पुराने वायसराय की कार्यकारी परिषद में मेरे पास दो प्रशासनिक विभाग थे, श्रम और सीपीडब्ल्यूडी, जहां मैंने बहुत सी योजना परियोजनाओं को देखा और मुझे कुछ प्रशासनिक विभाग मिलना चाहिए। प्रधानमंत्री सहमत हो गए और कहा कि वे मुझे कानून के अलावा योजना विभाग भी देंगे जिसे वे बनाने का इरादा रखते हैं। दुर्भाग्य से योजना विभाग बहुत देर से आया और जब आया तो मुझे छोड़ दिया गया। मेरे कार्यकाल में एक मंत्री से दूसरे मंत्री को कई विभागों का हस्तांतरण हुआ है। मुझे लगा कि शायद इनमें से किसी एक के लिए मेरे नाम पर विचार किया जा सकता है। लेकिन मुझे हमेशा विचार से बाहर रखा गया। कई मंत्रियों को दो या तीन विभाग दिए गए हैं, जिससे उन पर काम का बोझ बढ़ गया है। मेरे जैसे दूसरे लोग और काम चाहते हैं। जब कोई मंत्री कुछ दिनों के लिए विदेश चला जाता है, तो मुझे अस्थायी रूप से कोई विभाग संभालने के लिए भी विचार नहीं किया जाता। यह समझना मुश्किल है कि प्रधानमंत्री मंत्रियों के बीच सरकारी काम के बंटवारे के पीछे क्या सिद्धांत अपनाते हैं। क्या यह क्षमता है? क्या यह भरोसा है? क्या यह दोस्ती है? क्या यह लचीलापन है? मुझे कैबिनेट की मुख्य समितियों जैसे विदेश मामलों की समिति या रक्षा समिति का सदस्य भी नहीं बनाया गया। जब आर्थिक मामलों की समिति बनाई गई, तो मैंने उम्मीद की थी कि मैं मुख्य रूप से अर्थशास्त्र और वित्त का छात्र होने के कारण इस समिति में नियुक्त किया जाएगा। लेकिन मुझे छोड़ दिया गया। मुझे कैबिनेट द्वारा इसमें नियुक्त किया गया था, जब प्रधानमंत्री इंग्लैंड गए थे। लेकिन जब वे लौटे, तो कैबिनेट के पुनर्गठन पर अपने कई निबंधों में से एक में उन्होंने मुझे छोड़ दिया। बाद में पुनर्निर्माण में मेरा नाम समिति में जोड़ा गया, लेकिन यह मेरे विरोध के परिणामस्वरूप हुआ।

मुझे यकीन है कि प्रधानमंत्री इस बात से सहमत होंगे कि मैंने इस संबंध में उनसे कभी कोई शिकायत नहीं की। मैं कभी भी मंत्रिमंडल के अंदर सत्ता की राजनीति के खेल या खाली पद पर विभाग छीनने के खेल का हिस्सा नहीं रहा। मैं सेवा में विश्वास करता हूं, उस पद पर सेवा जिसे प्रधानमंत्री ने, जिन्होंने मंत्रिमंडल के प्रमुख के रूप में मुझे सौंपना उचित समझा। हालांकि, मेरे लिए यह बिल्कुल अमानवीय होता अगर मुझे यह महसूस न होता कि मेरे साथ गलत किया जा रहा है।

अब मैं एक और मामले का ज़िक्र करूँगा जिसने मुझे सरकार से असंतुष्ट कर दिया था। यह पिछड़े वर्गों और अनुसूचित जातियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार से संबंधित है। मुझे बहुत दुख है कि संविधान में पिछड़े वर्गों के लिए कोई सुरक्षा उपाय नहीं किए गए। इसे राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाने वाले आयोग की सिफारिशों के आधार पर कार्यकारी सरकार द्वारा किया जाना था। संविधान पारित किए हुए एक साल से ज़्यादा समय बीत चुका है। लेकिन सरकार ने आयोग नियुक्त करने के बारे में सोचा भी नहीं है। 1946 का वह साल, जिसमें मैं पद से बाहर था, मेरे लिए और अनुसूचित जातियों के प्रमुख सदस्यों के लिए बहुत चिंता का साल था। अनुसूचित जातियों के लिए संवैधानिक सुरक्षा उपायों के मामले में अंग्रेजों ने जो वादे किए थे, उनसे वे मुकर गए थे और अनुसूचित जातियों को यह नहीं पता था कि संविधान सभा इस मामले में क्या करेगी। चिंता के इस दौर में मैंने अनुसूचित जातियों की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र को प्रस्तुत करने के लिए एक रिपोर्ट तैयार की थी। लेकिन मैंने उसे प्रस्तुत नहीं किया। मुझे लगा कि जब तक संविधान सभा और भावी संसद को इस मामले से निपटने का मौका नहीं मिल जाता, तब तक इंतजार करना बेहतर होगा। अनुसूचित जातियों की स्थिति की रक्षा के लिए संविधान में किए गए प्रावधान मुझे संतुष्ट नहीं कर पाए। फिर भी, मैंने उन्हें उसी रूप में स्वीकार किया, इस उम्मीद में कि सरकार उन्हें प्रभावी बनाने के लिए कुछ दृढ़ संकल्प दिखाएगी। आज अनुसूचित जातियाँ क्या हैं? जहाँ तक मैं देखता हूँ, वे पहले जैसी ही हैं। वही पुराना अत्याचार, वही पुराना उत्पीड़न, वही पुराना भेदभाव जो पहले था, आज भी मौजूद है, और शायद सबसे बुरे रूप में। मैं सैकड़ों मामलों का उल्लेख कर सकता हूँ जहाँ दिल्ली और आस-पास के इलाकों के अनुसूचित जातियों के लोग मेरे पास सवर्ण हिंदुओं और पुलिस के खिलाफ अपनी व्यथा की कहानियाँ लेकर आए हैं, जिन्होंने उनकी शिकायत दर्ज करने और उन्हें कोई मदद देने से इनकार कर दिया है। मैं सोच रहा था कि क्या भारत में अनुसूचित जातियों की स्थिति के समान दुनिया में कोई और समानांतर है। मुझे कोई नहीं मिल रहा है। और फिर भी अनुसूचित जातियों को कोई राहत क्यों नहीं दी जाती है? मुसलमानों की सुरक्षा के बारे में सरकार जो चिंता दिखाती है, उसकी तुलना करें। प्रधानमंत्री का पूरा समय और ध्यान मुसलमानों की सुरक्षा के लिए समर्पित है। मैं भारत के मुसलमानों को जब भी और जहाँ भी ज़रूरत हो, उन्हें पूरी सुरक्षा देने की अपनी इच्छा में किसी के सामने झुकता नहीं, यहाँ तक कि प्रधानमंत्री के सामने भी नहीं। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या सिर्फ़ मुसलमान ही ऐसे लोग हैं जिन्हें सुरक्षा की ज़रूरत है? क्या अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और भारतीय ईसाइयों को सुरक्षा की ज़रूरत नहीं है? उन्होंने इन समुदायों के लिए क्या चिंता दिखाई है? जहाँ तक मैं जानता हूँ, किसी को भी नहीं और फिर भी ये ऐसे समुदाय हैं जिन्हें मुसलमानों से कहीं ज़्यादा देखभाल और ध्यान की ज़रूरत है।

चाहिए, जहाँ हमारे लोगों की स्थिति सभी अखबारों में असहनीय लगती है। इसके बावजूद हम कश्मीर मुद्दे पर अपना सब कुछ दांव पर लगा रहे हैं। फिर भी मुझे लगता है कि हम एक अवास्तविक मुद्दे पर लड़ रहे हैं। जिस मुद्दे पर हम अधिकतर समय लड़ते रहे हैं, वह यह है कि कौन सही है और कौन गलत। मेरे विचार से असली मुद्दा यह नहीं है कि कौन सही है बल्कि यह है कि क्या सही है। इसे मुख्य प्रश्न मानते हुए, मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि सही समाधान कश्मीर का विभाजन करना है। हिंदू और बौद्ध भाग भारत को दे दो और मुस्लिम भाग पाकिस्तान को दे दो जैसा कि हमने भारत के मामले में किया था। हमें वास्तव में कश्मीर के मुस्लिम भाग से कोई सरोकार नहीं है। यह कश्मीर और पाकिस्तान के मुसलमानों के बीच का मामला है। वे इस मुद्दे को अपनी मर्जी से तय कर सकते हैं। या आप चाहें तो इसे तीन हिस्सों में बांट सकते हैं; युद्ध विराम क्षेत्र, घाटी और जम्मू-लद्दाख क्षेत्र को छोड़कर केवल घाटी में ही जनमत संग्रह कराया जाएगा। मुझे डर है कि प्रस्तावित जनमत संग्रह में, जो कि एक समग्र जनमत संग्रह होगा, कश्मीर के हिंदुओं और बौद्धों को उनकी इच्छा के विरुद्ध पाकिस्तान में घसीटा जा सकता है और हमें उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिनका सामना हम आज पूर्वी बंगाल में कर रहे हैं।

अब मैं चौथे मामले का ज़िक्र करूँगा जिसका मेरे इस्तीफ़े से काफ़ी संबंध है। मंत्रिमंडल सिर्फ़ समितियों द्वारा लिए गए फ़ैसलों का रिकॉर्ड रखने और पंजीकरण करने का कार्यालय बन गया है। जैसा कि मैंने कहा, मंत्रिमंडल अब समितियों के ज़रिए काम करता है। एक रक्षा समिति है। एक विदेश समिति है। रक्षा से जुड़े सभी महत्वपूर्ण मामलों का निपटारा रक्षा समिति करती है। मंत्रिमंडल के वही सदस्य नियुक्त किए जाते हैं। मैं इनमें से किसी भी समिति का सदस्य नहीं हूँ। वे एक लोहे के पर्दे के पीछे काम करते हैं। जो दूसरे सदस्य नहीं हैं उन्हें सिर्फ़ संयुक्त ज़िम्मेदारी लेनी होती है, नीति निर्माण में भाग लेने का कोई अवसर नहीं मिलता। यह एक असंभव स्थिति है।

अब मैं उस मामले पर बात करूंगा, जिसके कारण मैं अंततः इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि मुझे इस्तीफा दे देना चाहिए। यह हिंदू संहिता के साथ किया गया व्यवहार है। यह विधेयक 11 अप्रैल, 1947 को इस सदन में पेश किया गया था। चार वर्षों तक जीवित रहने के बाद, इसके चार खंड पारित होने के बाद इसे बिना रोए और बिना गाए मार दिया गया और मर गया। जब तक यह सदन में था, तब तक यह रुक-रुक कर चलता रहा। पूरे एक वर्ष तक, सरकार ने इसे प्रवर समिति को भेजने की आवश्यकता नहीं समझी। इसे 9 अप्रैल, 1948 को प्रवर समिति को भेजा गया। 12 अगस्त, 1948 को सदन में रिपोर्ट पेश की गई। रिपोर्ट पर विचार करने का प्रस्ताव मैंने 31 अगस्त, 1948 को रखा था। केवल प्रस्ताव रखने के लिए ही विधेयक को एजेंडे में रखा गया था। प्रस्ताव पर चर्चा वर्ष 1949 के फरवरी सत्र तक नहीं होने दी गई। तब भी इस पर निरंतर चर्चा नहीं होने दी गई। इसे 10 महीने, फरवरी में 4 दिन, मार्च में 1 दिन और अप्रैल 1949 में 2 दिन में बांटा गया। इसके बाद दिसंबर 1949 में बिल को एक दिन दिया गया, यानी 19 दिसंबर, जिस दिन सदन ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार किया कि प्रवर समिति द्वारा रिपोर्ट किए गए बिल पर विचार किया जाए। वर्ष 1950 में बिल को कोई समय नहीं दिया गया। अगली बार बिल सदन के सामने 5 फरवरी 1951 को आया, जब बिल पर खंड दर खंड विचार किया गया। बिल को केवल तीन दिन 5, 6 और 7 फरवरी दिए गए और उसे सड़ने के लिए छोड़ दिया गया।

वर्तमान संसद का यह अंतिम सत्र था, इसलिए मंत्रिमंडल को इस बात पर विचार करना था कि क्या हिंदू कोड बिल को इस संसद के समाप्त होने से पहले पारित किया जाना चाहिए या इसे नई संसद के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए। मंत्रिमंडल ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि इसे इसी संसद में पारित किया जाना चाहिए। इसलिए विधेयक को कार्यसूची में रखा गया और 17 सितंबर 1951 को खंड दर खंड आगे विचार के लिए लिया गया। जब चर्चा चल रही थी, तो प्रधानमंत्री ने एक नया प्रस्ताव रखा, अर्थात, कि उपलब्ध समय के भीतर पूरे विधेयक को पारित नहीं किया जा सकता है और इसके एक हिस्से को कानून में अधिनियमित किया जाना वांछनीय है, बजाय इसके कि इसे पूरी तरह से बर्बाद होने दिया जाए। यह मेरे लिए बहुत बड़ा झटका था। लेकिन मैंने सहमति व्यक्त की, क्योंकि कहावत है कि 卐जब पूरा खो जाने की संभावना हो तो एक हिस्से को बचाना बेहतर होता है卐। प्रधानमंत्री ने सुझाव दिया कि हमें विवाह और तलाक वाले हिस्से का चयन करना चाहिए। अपने संक्षिप्त रूप में विधेयक आगे बढ़ा। विधेयक पर चर्चा के दो या तीन दिन बाद प्रधानमंत्री एक और प्रस्ताव लेकर आए। इस बार उनका प्रस्ताव था कि पूरे विधेयक को ही खारिज कर दिया जाए, यहां तक कि विवाह और तलाक के विधेयक को भी खारिज कर दिया जाए। यह मेरे लिए एक बड़ा झटका था – एकाएक बिजली का झटका। मैं स्तब्ध रह गया और कुछ भी नहीं कह सका। मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं कि इस संक्षिप्त विधेयक को खारिज करने का कारण समय की कमी थी। मुझे यकीन है कि इस संक्षिप्त विधेयक को इसलिए खारिज किया गया क्योंकि मंत्रिमंडल के अन्य और अधिक शक्तिशाली सदस्य अपने विधेयकों को प्राथमिकता देना चाहते थे। मैं यह समझने में असमर्थ हूं कि केले और अलीगढ़ विश्वविद्यालय विधेयक, प्रेस विधेयक को हिंदू संहिता के मुकाबले कैसे प्राथमिकता दी जा सकती है, भले ही वह कमजोर रूप में ही क्यों न हो? ऐसा नहीं है कि अलीगढ़ विश्वविद्यालय या बनारस विश्वविद्यालय को नियंत्रित करने के लिए क़ानून की किताब में कोई कानून नहीं था। ऐसा नहीं है कि अगर इस सत्र में विधेयक पारित नहीं किए गए होते तो ये विश्वविद्यालय बर्बाद हो गए होते। ऐसा नहीं है कि प्रेस विधेयक को तत्काल पारित करने की आवश्यकता थी। क़ानून की किताब में पहले से ही एक कानून है और विधेयक को प्रतीक्षा करनी चाहिए थी। मुझे यह आभास हुआ कि यद्यपि प्रधानमंत्री ईमानदार थे, फिर भी उनमें हिंदी संहिता विधेयक को पारित कराने के लिए आवश्यक गंभीरता और दृढ़ संकल्प नहीं था।

इस विधेयक के सम्बन्ध में मुझे बहुत अधिक मानसिक यातना दी गई है। पार्टी मशीनरी की सहायता मुझे नहीं दी गई। प्रधानमंत्री ने वोट की स्वतंत्रता दी, जो पार्टी के इतिहास में एक असामान्य बात है। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन मुझे दो चीजों की अपेक्षा थी। मुझे भाषणों की समय-सीमा के बारे में पार्टी व्हिप की अपेक्षा थी और मुख्य सचेतक को पर्याप्त बहस हो जाने के बाद समापन प्रस्ताव लाने का निर्देश था। भाषणों की समय-सीमा के बारे में व्हिप से विधेयक पारित हो जाता। जब मतदान की स्वतंत्रता दी गई थी, तो भाषणों की समय-सीमा के बारे में व्हिप देने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी। लेकिन ऐसा व्हिप कभी जारी नहीं किया गया। संसदीय कार्य मंत्री का आचरण, जो हिंदू संहिता के सम्बन्ध में पार्टी का मुख्य सचेतक भी है, कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि सबसे असाधारण रहा है। वे संहिता के सबसे कट्टर विरोधी रहे हैं और समापन प्रस्ताव लाकर मेरी सहायता करने के लिए कभी उपस्थित नहीं हुए। एक ही खण्ड पर कई दिनों और घंटों तक हंगामा होता रहा। लेकिन मुख्य सचेतक, जिसका कर्तव्य सरकारी समय की बचत करना और सरकारी काम को आगे बढ़ाना है, हिंदू संहिता पर सदन में विचार-विमर्श के दौरान व्यवस्थित रूप से अनुपस्थित रहा है। मैंने कभी ऐसा मामला नहीं देखा है जिसमें मुख्य सचेतक प्रधानमंत्री के प्रति इतना बेवफा हो और प्रधानमंत्री बेवफा सचेतक के प्रति इतना वफादार हो। इस असंवैधानिक व्यवहार के बावजूद, मुख्य सचेतक वास्तव में प्रधानमंत्री का प्रिय है। अपनी बेवफाई के बावजूद उसे पार्टी संगठन में पदोन्नति मिली। ऐसी परिस्थितियों में आगे बढ़ना असंभव है।

कहा गया है कि विपक्ष के मजबूत होने के कारण विधेयक को वापस लेना पड़ा। विपक्ष कितना मजबूत था? इस विधेयक पर पार्टी में कई बार चर्चा हुई और विरोधियों ने इसे विभाजन की स्थिति में पहुंचा दिया। हर बार विरोधियों को परास्त कर दिया

गया। पिछली बार जब पार्टी की बैठक में विधेयक पर चर्चा हुई थी, तो 120 में से केवल 20 इसके विरोध में थे। जब विधेयक पर पार्टी में चर्चा हुई, तो करीब साढ़े तीन घंटे में 44 खंड पारित हो गए। इससे पता चलता है कि पार्टी के भीतर विधेयक का कितना विरोध था। सदन में ही विधेयक के तीन खंडों - 2, 3 और 5 पर मतभेद हुए हैं। हर बार खंड 4 पर भी भारी बहुमत रहा है, जो हिंदू संहिता की आत्मा है।

इसलिए मैं प्रधानमंत्री के इस बिल को समय के आधार पर छोड़ने के फैसले को स्वीकार करने में असमर्थ था। मुझे अपने इस्तीफे के लिए यह विस्तृत स्पष्टीकरण देना पड़ा क्योंकि कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि मैं अपनी बीमारी के कारण जा रहा हूँ। मैं ऐसे किसी भी सुझाव को अस्वीकार करना चाहता हूँ। मैं बीमारी के कारण अपने कर्तव्य को छोड़ने वाला आखिरी व्यक्ति हूँ।

यह कहा जा सकता है कि मेरा इस्तीफा समय से बाहर है और अगर मैं सरकार की विदेश नीति और पिछड़े वर्गों और अनुसूचित जातियों के साथ किए जा रहे व्यवहार से असंतुष्ट था तो मुझे पहले ही इस्तीफा दे देना चाहिए था। यह आरोप सच लग सकता है। लेकिन मेरे पास कुछ कारण थे, जिनकी वजह से मैं इस्तीफा नहीं दे पाया। सबसे पहले, मैं जब से मंत्रिमंडल का सदस्य बना हूं, तब से मैं ज्यादातर समय संविधान निर्माण में लगा रहा हूं। 26 जनवरी 1950 तक मेरा पूरा ध्यान संविधान निर्माण में लगा रहा और उसके बाद मैं जन प्रतिनिधित्व विधेयक और परिसीमन आदेशों में उलझा रहा। मेरे पास हमारे विदेश मामलों पर ध्यान देने के लिए बिल्कुल भी समय नहीं था। मैंने इस काम को अधूरा छोड़कर जाना उचित नहीं समझा।

दूसरी बात, मैंने हिंदू संहिता के लिए इस पर बने रहना ज़रूरी समझा। कुछ लोगों की राय में, हिंदू संहिता के लिए इस पर बने रहना मेरे लिए गलत हो सकता है। मैंने एक अलग दृष्टिकोण अपनाया। हिंदू संहिता इस देश में विधायिका द्वारा किया गया अब तक का सबसे बड़ा सामाजिक सुधार उपाय था। अतीत में भारतीय विधायिका द्वारा पारित या भविष्य में पारित होने वाले किसी भी कानून की तुलना इसके महत्व के मामले में नहीं की जा सकती।

वर्ग और वर्ग के बीच, लिंग और लिंग के बीच असमानता को, जो हिंदू समाज की आत्मा है, अछूता छोड़ना और आर्थिक समस्याओं से संबंधित कानून पारित करना हमारे संविधान का मज़ाक उड़ाना और कूड़े के ढेर पर महल बनाना है। हिंदू संहिता को मैंने यही महत्व दिया है। इसी के लिए मैं अपने मतभेदों के बावजूद उस पर कायम रहा। इसलिए अगर मैंने कोई गलत काम किया है, तो वह कुछ अच्छा करने की उम्मीद में किया है। क्या मेरे पास ऐसी उम्मीद के लिए कोई आधार नहीं था, ताकि मैं विरोधियों की बाधा डालने वाली चालों पर काबू पा सकूं? मैं इस संबंध में प्रधानमंत्री द्वारा सदन में दिए गए केवल तीन बयानों का उल्लेख करना चाहूंगा।

28 नवम्बर, 1949 को प्रधानमंत्री ने निम्नलिखित आश्वासन दिया

इसके अलावा, सरकार इस चीज़ (हिंदू कोड) के लिए प्रतिबद्ध है। वह इसे लागू कर रही है।

卐सरकार इस पर आगे बढ़ेगी। किसी उपाय को स्वीकार करना इस सदन का काम है, लेकिन अगर कोई सरकार कोई महत्वपूर्ण उपाय करती है और सदन उसे अस्वीकार कर देता है, तो सदन उस सरकार को अस्वीकार कर देता है और सरकार चली जाती है तथा उसकी जगह दूसरी सरकार आ जाती है। यह स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए कि यह उन महत्वपूर्ण उपायों में से एक है, जिसे सरकार महत्व देती है और जिस पर वह टिकेगी या गिरेगी।

पुनः 19 दिसम्बर 1949 को प्रधानमंत्री ने कहा

मैं नहीं चाहता कि सदन इस बात पर ज़रा भी विचार करे कि हम मानते हैं कि यह हिंदू कोड बिल महत्वहीन है, क्योंकि हम इसे सबसे ज़्यादा महत्व देते हैं, जैसा कि मैंने कहा, किसी विशेष खंड या किसी चीज़ के कारण नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक समस्याओं में इस विशाल समस्या के लिए बुनियादी दृष्टिकोण के कारण। हमने इस देश में राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल की है, राजनीतिक स्वतंत्रता। यह यात्रा का एक चरण है, और अन्य चरण हैं, आर्थिक, सामाजिक और अन्य और अगर समाज को आगे बढ़ना है, तो सभी मोर्चों पर यह एकीकृत प्रगति होनी चाहिए।

26 सितम्बर, 1951 को प्रधानमंत्री ने कहा

मेरे लिए सदन को यह आश्वासन देना आवश्यक नहीं है कि सरकार इस उपाय के साथ आगे बढ़ने की इच्छा रखती है, जहां तक हम संभावनाओं के भीतर आगे बढ़ सकते हैं, और जहां तक हमारा संबंध है, हम इस मामले को तब तक स्थगित मानते हैं जब तक कि अगला अवसर - मुझे आशा है कि यह इस संसद में होगा - स्वयं प्रस्तुत न हो जाए।

यह प्रधानमंत्री द्वारा विधेयक को वापस लेने की घोषणा के बाद हुआ था। प्रधानमंत्री की इन घोषणाओं पर कौन विश्वास नहीं कर सकता था? अगर मुझे नहीं लगता कि प्रधानमंत्री के वादों और कामों में अंतर हो सकता है तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। मंत्रिमंडल से मेरा बाहर होना इस देश में किसी के लिए भी बहुत चिंता का विषय नहीं हो सकता है। लेकिन मुझे खुद के प्रति ईमानदार रहना चाहिए और यह तभी संभव है जब मैं बाहर जाऊँ। ऐसा करने से पहले मैं अपने सहयोगियों को मंत्रिमंडल की सदस्यता के दौरान मेरे प्रति दिखाए गए दयालुता और शिष्टाचार के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। हालाँकि मैं संसद की अपनी सदस्यता से इस्तीफा नहीं दे रहा हूँ, लेकिन मैं संसद के सदस्यों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने मेरे प्रति बहुत सहिष्णुता दिखाई है।

10 अक्टूबर 1951, बी.आर. अंबेडकर, नई दिल्ली

एसडीएम शिवजीत भारती के नेतृत्व में जिला स्तरीय टीम ने किया वात्सल्य किशोरी कुंज बाल आश्रम तथा राधा कृष्ण बाल आश्रम का निरीक्षण

गजब हरियाणा न्यूज/शेर सिंह

अम्बाला, एसडीएम शिवजीत भारती के नेतृत्व में आज किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम 2015 के तहत गठित जिला स्तरीय टीम द्वारा नारायणगढ़ स्थित वात्सल्य किशोरी कुंज तथा राधा कृष्ण बाल आश्रम का त्रैमासिक निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के दौरान टीम ने दोनों आश्रमों में रह रहे बच्चों को प्रदान की जा रही सुविधाओं का विस्तार से जायजा लिया। टीम के सदस्यों ने बच्चों से बातचीत कर उनकी जरूरतों और समस्याओं को भी जाना। निरीक्षण के दौरान बच्चों के आवास, भोजन, पढ़ाई, स्वास्थ्य सेवाओं, मनोरंजन और अन्य व्यवस्थाओं की बारीकी से समीक्षा की गई।

टीम द्वारा की गई जांच में दोनों आश्रमों की सभी व्यवस्थाएं संतोषजनक पाई गईं। बच्चों के रहने, पढ़ाई और अन्य सुविधाओं के प्रबंध की सराहना की गई और आश्रम प्रबंधन को निर्देश दिया गया कि बच्चों की भलाई और विकास के लिए इसी तरह की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए।

इस निरीक्षण टीम में महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी मीक्षा रंगा तथा किशोर न्याय बोर्ड की सदस्य टीना मित्तल, बाल कल्याण समिति की सदस्य रजनी देवी, जिला बाल संरक्षण अधिकारी ममता रानी, एसएमओ डॉ. राकेश सैनी तथा डीसीडब्ल्यूओ विश्वास मलिक भी शामिल रहे।

निरीक्षण का उद्देश्य किशोर न्याय अधिनियम 2015 के प्रावधानों के अनुसार संस्थानों में बच्चों के हितों की सुरक्षा और उनके समुचित विकास को सुनिश्चित करना था। एसडीएम शिवजीत भारती ने टीम के सभी सदस्यों से समन्वय और नियमित मॉनिटरिंग बनाए रखने को कहा ताकि आश्रमों में बच्चों को सर्वोत्तम सुविधाएं निरंतर मिलती रहें। इस अवसर पर जिला युवा शक्ति संगठन के अध्यक्ष बलजिन्द्र सिंह, महासचिव सोहन लाल, राधा कृष्ण बाल देख रेख संस्थान अधीक्षक राजेन्द्र सिंह रावत, मीनाक्षी सैनी, इन्द्र जीत सिंह, राजेश कुमार तथा वात्सल्य किशोरी कुंज के संचालक चेतन कुमार, विशाल काशिव, मोना, नीलम तथा रविन्द्र कौर आदि उपस्थित रहे।

जिला युवा शक्ति संगठन के अध्यक्ष बलजिन्द्र सिंह ने बताया कि जिला युवा शक्ति संगठन द्वारा राधा कृष्ण बाल आश्रम संचालित किया जा रहा है। जिसमें बच्चों की देख रेख की जाती है।

लघु सचिवालय नारायणगढ़ के लघु बाल भवन नारायणगढ़ में कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र की शुरूआत 1 जुलाई से होगी: जिला बाल कल्याण अधिकारी विश्वास मलिक

गजब हरियाणा न्यूज/शेर सिंह

अम्बाला, हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद् जिला शाखा, बाल भवन, अम्बाला (लघु बाल भवन, नारायणगढ़) लघु सचिवालय नारायणगढ़ के द्वितीय तल पर स्थापित लघु बाल भवन नारायणगढ़ में कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र की शुरूआत 1 जुलाई 2025 से करने जा रहा है।

लघु बाल भवन नारायणगढ़ द्वारा कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र की शुरूआत हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्षा श्रीमति सुमन सैनी, डॉ. सुषमा गुप्ता मानद् महासचिव एवं उपायुक्त अजय सिंह तोमर के सपनों के अनुसार हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद के अंतर्गत उपमण्डल नारायणगढ में लघु सचिवालय के द्वितीय तल पर लघु बाल भवन की स्थापना होने जा रही है। जिसमें उपायुक्त महोदय के आदेशानुसार 1 जुलाई 2025 से नारायणगढ़ क्षेत्र की गरीब/अन्तयोदय परिवारों से आने वाली बहन-बेटियों के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्रों की शुरूआत होने जा रही है। 01 जुलाई से तीन कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र जैसे कि कम्पयूटर प्रशिक्षण केन्द्र, सिलाई-कढाई एवं फैशन डिजाइनिंग केन्द्र एवं ब्यूटी केयर/स्किन केयर केन्द्र की कक्षाएं प्रारम्भ हो जाएगीं-

इस बारे में जानकारी देते हुए जिला बाल कल्याण अधिकारी विश्वास मलिक ने बताया कि 6 माह/1 साल की अवधि के लिए कंप्यूटर प्रशिक्षण कोर्स लघु बाल भवन, नारायणगढ में कर सकते है। इसके लिए 18 वर्ष या इससे उपर की आयु का दसवीं/बारवीं या इससे अधिक शैक्षणिक योग्यता पास कोई भी लड़का, लड़की पुरूष, महिला एवं जनसाधरण नई शिक्षा निति - 2020 के तहत स्कूल छात्र/छात्रों की स्कूल समय के बाद सांय कालीन 3-5 बजे की कक्षा का बैच शुरू होगा। उन्होने केन्द्र की प्रतिदिन की समय-सारणी के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि सुबह 9 बजे से सांय 5 बजे तक (सोमवार से शनिवार) महीने के दूसरे शनिवार और राजकीय अवकाश के दिन केंद्र बंद रहेगा।

अपनी रसोई, स्वस्थ जीवन

रसोई टिप्स:.....

भूल से भी ढक कर ना पकाएं ये 7 सब्जियां, स्वाद के साथ सेहत का भी होगा नुकसान!

ऐसी कुछ सब्जियां हैं, जिन्हें कभी भी ढक कर नहीं पकाना चाहिए। इससे इनका स्वाद तो कम होता ही है साथ ही इनके पोषक तत्व भी कम हो जाते हैं।

इन सब्जियों को ढक कर ना पकाएं

हमारे रोज के खाने में अक्सर कोई ना कोई सब्जी जरूर शामिल होती है। बेस्ट बात है कि टेस्टी होने के साथ-साथ ये हेल्दी भी होती हैं। हालांकि कई बार सब्जियां पकाते समय हम कुछ ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जो इनके फायदे और स्वाद दोनों को कम कर देती हैं। ऐसी ही एक गलती है सब्जियों को ढक कर पकाना। दरअसल ऐसी कुछ सब्जियां हैं, जिन्हें कभी भी ढक कर नहीं पकाना चाहिए। इससे इनका स्वाद तो कम होता ही है साथ ही इनके पोषक तत्व भी कम हो जाते हैं।

भिंडी को ढक कर ना पकाएं

भिंडी की सब्जी को कभी ढक कर नहीं पकाना चाहिए। ऐसा करने से भिंडी का चिपचिपापन बढ़ जाता है और टेक्सचर काफी सॉगी हो जाता है। ऐसी भिंडी खाने में एकदम अच्छी नहीं लगती। इससे भिंडी में मौजूद विटामिन सी का भी लॉस होता है। इसलिए कुरकुरी, टेस्टी और हेल्दी भिंडी खानी है तो इसे बिना ढके की कुक करें।

बैंगन की सब्जी

बैंगन में पानी की मात्रा काफी ज्यादा होती है और ये काफी सॉफ्ट भी होता है। ऐसे में ढक कर पकाने से इसका टेक्सचर और स्वाद दोनों बिगड़ जाते हैं। ज्यादा टेंपरेचर में पकाने के कारण बैंगन में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स भी कम हो सकते हैं और ज्यादा पानी की वजह से इसे पचाना भी मुश्किल हो सकता है। इसलिए बैंगन को बिना ढके, धीमी आंच पर ही कुक करना चाहिए।

पत्ता गोभी को बिना ढके पकाएं

पत्ता गोभी की सब्जी बना रही हैं, तो इसे हल्का फाई कर के बिना ढके ही कुक करें। दरअसल ढक कर पकाने से पत्तागोभी का कुरकुरपन खत्म हो जाता है और ये काफी सॉगी हो जाती है। इसके अलावा ज्यादा भाप की वजह से पत्तागोभी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन सी और विटामिन के भी कम होने लगते हैं।

शिमला मिर्च

शिमला मिर्च का क्रंच और टेस्ट बरकार रहे, इसके लिए इसे हमेशा बिना ढके ही पकाना चाहिए। ढक कर पकाने से इसका स्वाद और टेक्सचर तो खराब होते ही हैं, साथ ही इसमें मौजूद विटामिन सी और बीटा-कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स भी कम हो जाते हैं।

पालक को ना ढकें

पालक की सब्जी या साग को भी कभी ढक कर कुक नहीं करना चाहिए। दरअसल पालक में आयरन और विटामिन सी भरपूर मात्रा में होते हैं, लेकिन ढक कर पकाने से विटामिन सी जल्दी ऑक्सीडाइज हो जाता है। इसके अलावा पालक का हरा रंग भी फेड होने लगता है और टेस्ट भी उतना अच्छा नहीं आता।

फूलगोभी की सब्जी

फूलगोभी की सब्जी भी बिना ढके ही पकानी चाहिए। दरअसल फूलगोभी में सल्फर कंपाउंड मौजूद होते हैं, जो कैंसर से बचाव में मदद करते हैं। ढक कर भाप में पकाने से ये कम होने लगते हैं। कई बार ओवर कुक होने की वजह से सब्जी में अजीब से बदबू भी आ सकती है और टेस्ट भी खराब हो सकता है।

लौकी की सब्जी

लौकी की सब्जी पानी से भरपूर होती है। ऐसे में इसे ढक कर पकाने से ये और ज्यादा सॉगी टेक्सचर वाली और टेस्टलेस हो सकती है। इसके अलावा ढक कर तेज आंच पर पकाने से लौकी में मौजूद ग्लूकोज और फाइबर ब्रेकडाउन हो सकते हैं। इससे लौकी का ग्लाइसेमिक इंडेक्स भी कुछ हद तक बढ़ सकता है, जो डायबिटीज के मरीजों के लिए ठीक नहीं।

आम की 30 वैरायटी, 2 फुट के पौधे पर लदे फल... करनाल के किसान ने किया कमाल

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल। शहर में रहने वाले किसान उदय ने बताया, हमारे पास आम की 30 से अधिक वैरायटी उपलब्ध हैं, जिनमें पूसा श्रेष्ठा, लालिमा, आम्रपाली, नीलम, केसर समेत कई वैरायटी हैं। ये सभी वैरायटी जल्द ही फरूट देने वाली हैं। 2 फुट की ऊँचाई से ही पौधा फरूट देना शुरू कर देता है।

हरियाणा के करनाल में रहने वाले किसान उदय प्रताप ने अपने बाग में आम की इतनी वैरायटी को लगाया हुआ है, जिसे देखकर हर कोई हैरान है। आम के इतने छोटे पौधों पर फल लदे हुए शायद ही पहले किसी ने देखा हो। 2 फुट के पौधों पर भी आम लदे हुए हैं। करनाल में रहने वाले किसान उदय ने बताया, हमारे पास आम की 30 से अधिक वैरायटी उपलब्ध हैं, जिनमें पूसा श्रेष्ठा, लालिमा, आम्रपाली, नीलम, केसर समेत कई वैरायटी हैं। ये सभी वैरायटी जल्द ही फरूट देने वाली हैं। 2 फुट की ऊँचाई से ही पौधा फरूट देना शुरू कर देता है। कई पेड़ ऐसे हैं, जिनकी ऊँचाई 15 फुट से ऊपर ही नहीं है। किसान कम जगह में भी ऐसे पेड़ लगा सकते हैं। किसान उदय ने बताया कि आम की पुरानी किस्म से अधिक फरूट ये वाली वैरायटी देते हैं। आम की अब कई नई आधुनिक वैरायटी आ रही हैं, जो हर साल काफी फरूट देती हैं। किसान ने बताया, लोग हमारे बाग से ही फरूट लेकर जाते हैं। उसमें आम के फरूट के साथ सेब, ओड्डू, नाशपाती और आम की अलग-अलग वैरायटी हैं। किसान ने बताया कि 250 से 300 रुपए किलो तक आम आराम से बिकता है, जो पूरी तरह से ऑर्गेनिक है। आम पौधे और पेड़ पर ही पकता है। किसान अपने हाथों से तोड़कर आम को ले जाते हैं ये अलग चीज उन्हें यहां देखने को मिलती है। पूरे हिंदुस्तान से किसान हमारे पास आते हैं। केरल, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान समेत कई प्रदेशों से किसान यहां पहुँचते हैं। हम किसानों को नॉलेज भी देते हैं और अच्छी से अच्छी वैरायटी के पौधे भी दिखाते हैं। किसान ने बताया कि आम के एक छोटे पौधे से लगभग 20 से 25 किलो आम होते हैं। एक किलो आम 300 रुपए किलो तक बिकता है, यानी 6 से 7 हजार रुपये का मुनाफा एक पेड़ से हो जाता है। किसान के पास आम के 300 के करीब पौधे हैं। किसान ने कहा, हमारा सिर्फ एक उद्देश्य है कि नए किसान ज्यादा से ज्यादा बागवानी की तरफ आएं और बागवानी को सीखें. ठीक समय पर किस तरह से किसान बागवानी की खेती करें। किसान ने बताया कि अगर कोई किसान एक एकेड़ से बाग की शुरुआत करता है और मल्टीलेयर सेटअप करता है तो धान-गेंहू से ज्यादा पैसे का मुनाफा कमा सकता है।

बता दें कि 14 एकेड़ में किसान ने बागवानी की हुई है, जिसमें आम ,सेब, आलू बुखारे, आड़ू, नाशपाती, चीकू, अंजीर कई तरह के फल हैं। किसान उदय के पिता भी खेती करते हैं। किसान ने बताया कि उसने ग्रेजुएशन करने के बाद बीटेक की। वह नौकरी कर सकता था लेकिन उसने नौकरी करने की बजाय नौकरी देने का विकल्प चुना। किसान ने बताया कि आज तकरीबन 16 लोग उसके पास काम कर रहे हैं, जिन्हें रोजगार मिल रहा है और खुद किसान लाखों की कमाई कर रहा है।

अमृतवाणी

शिरोमणि सतगुरु रविदास जिओ की

करम बंधन में बन्ध रहियो, फल की ना तज्जियो आस
कर्म मानुष का धर्म है, सत् भाखै रविदास।।

व्याख्याः इसका अर्थ है कि हमे हमेशा अपने कर्म में लगे रहना चाहिए। शिरोमणि सतगुरु रविदास जी कहते हैं कि हमें अपने कर्मों के साथ-साथ, इसके बदले मिलने वाले फल की आशा भी नही छोडनी चाहिए। शिरोमणि सतगुरु रविदास श्लोक के माध्यम से बताते हैं कि कर्म करना हमारा धर्म है तो फल पाना भी हमारा सौभाग्य है।

धन गुरुदेव जी

घमंड

एक दिन बुद्ध के शिष्य आनंद ने पूछा, 'आप प्रवचन देते समय ऊंचे स्थान पर बैठते हैं और सुनने वाले नीचे बैठते हैं।ऐसा क्यों?

बुद्ध ने आनंद से कहा, 'एक बात बताओ, क्या तुमने कभी किसी झरने से पानी पिया है?'

आनंद बोला, 'हां, मैंने झरने से पानी पिया है।'

बुद्ध ने पूछा, 'तुमने पानी कैसे पिया?'

आनंद ने कहा, 'झरना ऊपर से बह रहा था, मैं झरने के नीचे खड़ा हो गया और पानी पी लिया।'

बुद्ध बोले, 'अगर झरने से पानी पीना है तो नीचे ही खड़े होना पड़ेगा। जो सत्संग, कथा या प्रवचन होता है, उसमें कहने वाला ऊपर बैठता है। उस कथा का संदेश ग्रहण करना है तो सुनने वाले को नीचे ही बैठना होगा। नीचे बैठने से हमारे स्वभाव में विनम्रता आती है, हमें अच्छी बातों को जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है। ऐसा करने से हमारा घमंड दूर होता है।'

बुद्ध की सीखः अगर कोई अच्छी बात सीखना चाहते हैं तो सबसे पहले अहंकार छोड़ देना चाहिए। इसके बाद विनम्रता के साथ ही अच्छी बातों को जीवन में उतारा जा सकता है।

विधायक योगेंद्र राणा ने करीब 100 लाभपात्रों को वितरित किये स्वामित्व कार्ड

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र

करनाल, विधायक योगेंद्र राणा ने वीरवार को नगरपालिका असन्ध कार्यालय में स्वामित्व योजना के तहत लाल डोरा एरिया में स्थित लगभग 100 लाभपात्रों को स्वामित्व कार्ड वितरित किये। उन्होंने कहा कि यह योजना हरियाणा सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। इसके लिए वे पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त करते है।

विधायक ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा क्रियान्वित स्वामित्व योजना के तहत आज रामधारी, पप्पी, नाथी राम , सुरजभान, शमशेर , फोई देवी सहित अन्य सभी लाभपात्रों को स्वामित्व कार्ड वितरित किये गए ।उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा प्रदेशवासियों को उनकी जमीन का मालिकाना हक दिलवाने के लिए स्वामित्व योजना की शुरुआत की गई। इस योजना के तहत ड्रोन के माध्यम से जमीनों का सर्वे करवाया जाता है। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत अब पात्र व्यक्ति जमीन का मालिकाना हक मिलने के बाद उस जमीन पर ऋण ले सकता है, पूर्व में रजिस्ट्री न होने के कारण व्यक्ति को ऋण लेने में परेशानी का सामना करना पड़ता था। इसी प्रकार रजिस्ट्री होने से व्यक्ति अपनी जमीन को किसी अन्य व्यक्ति को बेच सकता है। उन्होंने कहा कि मालिकाना हक मिलने से व्यक्ति को बहुत सी सुविधाओं का लाभ मिलता है ।भविष्य में भी उक्त स्कीम के तहत लाभपात्रों को इसी प्रकार से सरकार की स्वामित्व स्कीम का लाभ दिया जायेगा ।

इस मौके पर नगर पालिका सचिव प्रदीप कुमार जैन, नगरपालिका चेयरपर्सन सुनीता रानी, नपा उप चेयरमैन राजिन्द्र ढींगड़ा, पालिका अभियंता अशोक कुमार, पार्षद जगदीश गुप्ता, संदेश जिंदल, सीमांत शर्मा, ऋषि मुंडे, पार्षद प्रतिनिधि विजय गर्ग, अजय राणा,विनय राणा, जितेन्द्र कुमार, सुनील कुमार, प्रवीन कुमार व अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

विधायक ने किया पुलिस थाना परिसर में पौधरोपण

विधायक योगेंद्र राणा ने पुलिस थाना परिसर में पौधरोपण कर आमजन को स्वच्छ पर्यावरण का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने व ऑक्सीजन की पूर्ति करने के लिए पेड़ अहम हैं। इसलिए पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए हर व्यक्ति को ज्यादा से ज्यादा संख्या में पौधे लगाने चाहिए । पर्यावरण शुद्ध रखने से हम कई तरह की बीमारियों से बच सकते हैं। उन्होंने कहा कि सभी सामाजिक संगठनों, विद्यार्थियों, महिलाओं व आम नागरिकों को इस कार्य के लिये आगे आना चाहिए और वर्ष में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए । पौधे लगाने के साथ-साथ उसकी देखरेख करना भी बहुत जरूरी है। इस मौके पर डी एस पी महावीर सिंह सहित अन्य पुलिस अधिकारियों व गणमान्य व्यक्तियों ने भी पौधरोपण किया। इस अवसर पर पुलिस थाना प्रभारी विष्णु मित्र व महिला थाना प्रभारी सुनीता रानी भी मौजूद रही।

राजस्थान में भी है एक अजंता एलोरा। गौरवशाली बौद्ध धरोहर लेकिन गुमनाम.. अनजान.. दुनिया की नज़रों से ओझल।

राजस्थान के कोटा संभाग के झालावाड़ जिले का क्षेत्र है डग और भवानी मंडी, राज.-म.प्रदेश का बोर्डर इलाका। यहां कोलवी क्षेत्र की प्राचीन बौद्ध गुफाएं, विहार ,स्तूप, चैत्य, बुद्ध प्रतिमाएं दुनिया का अचंभा है। ये अजंता एलोरा की तरह लगभग चालीस कि.मी. क्षेत्र में पांच अलग अलग पहाड़ियों में फैली हुई है। डॉ. इम्पे ने इन्हें खोजा और सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने यहां आकर मुहर लगाई।

ये धम्म धरोहर लेटेराइट (लौहयुक्त) चट्टानों से 3- 8वीं सदी में बनाई गई। भिक्षुओं द्वारा सिर्फ छैनी हथौड़े से बनाई इतनी कलात्मक और विशाल दोमंजिला गुफाओं, विहारों, स्तूपों, सभा कक्षों को देखकर आश्चर्य होता है। कल्पना से भी परे हैं।

भिक्षु भिक्षुणियों के भिक्षाटन, ध्यान, धम्म शिक्षा, धम्म प्रचार के साथ उनके हाथों के हुनर को देखकर ताज्जुब होता है आखिर उन्होंने ऐसी भव्य बुद्ध प्रतिमाएं, विशाल स्तूप, सभागृह आवास और विहार कैसे बनाए होंगे? और वह भी ईट पत्थरों को जोड़कर नहीं बल्कि विशाल लोह चट्टानों को काटकर, तराशकर।

यहां हर पहाड़ी के ऊपर पूरी गोलाई में चारों गुफाओं का मानो एक व्यवस्थित गांव बसा हुआ है जिसमें जिसमें भिक्षुओं के ध्यान, आवास ,पूजा, सभा कक्ष, कुआ आदि बने हुए हैं। बुद्ध वाणी को जगत में फैलाने के लिए ये केंद्र बारहवीं सदी तक सक्रिय रहे।

यह इलाका पर्वत वाला और घनी वनस्पति का भी नहीं था, जीवन निर्वाह के यहां साधन भी नहीं थे फिर भी दूर दूर से आकर भिक्षुओं ने धम्म प्रचार के लिए गर्म और सूखे इलाके में ऐसी संकटभरी जगहों को क्यों चुना, यह जिज्ञासा का विषय है। उस काल के अवंतिका जनपद के भिक्षु भिक्षुणी संघ के उस महान त्याग, तप और योगदान को वंदन।

इन पहाड़ी बौद्ध गुफाओं में कोलवी, हात्यागोड़, विनाएगा, पोलाडूंगर और धम्मानार केन्द्र प्रमुख हैं।

आठवीं सदी के बाद बौद्ध धम्म की प्रतिक्रांति के दौर में ऐसा विकट समय आया कि धम्म वचनों से गुंजायमान रहने वाले ये विशाल केंद्र सुनसान हो गये। विरोधियों ने तहस नहस कर दिये, अतिक्रमण कर चैत्यों को शिवलिंग में बदल दिये। बुद्ध, धम्म और संघ के इतिहास को ध्वस्त कर दिया।

भगवान बुद्ध की गौरवशाली विरासत को जिन भिक्षु भिक्षुणी संघ ने अथाह संकट झेल कर जीवित रखा, जगत में फैलाया, वह आज भी हमें दर्शन देकर जागृत करती है और वर्तमान मानव जगत को फिर से धम्म वाणी के प्रचार प्रसार के लिए प्रेरित करती है।

चिंता यह है कि यह विश्व धरोहर सरकार व समाज की ओर से पूरी तरह से उपेक्षित है। अपने धम्म प्रकाश व अस्तित्व को बचाने के लिए यह धरोहर सदियों से संघर्ष कर जूझ रही हैं। प्राकृतिक संकट को इन्होंने सहा लेकिन वैचारिक विरोधियों के आगे ये असहाय हैं।

आज ये विरासत हमें आह्वावान कर रही हैं कि धम्म के वाहकों अपने इतिहास को याद करो, विरासत को संभालो और धम्म वचनों को फिर से जगत में फैलाओ। सारा विश्व बुद्ध के मानव कल्याण के मार्ग की चल पड़ा है।

सबका मंगल हो...
सभी प्राणी सुखी हो
यात्रा वृत्तांत
डॉ एम एल परिहार,
पाली. जयपुर

करुणा

गाँधी जैसे अच्छे बाप के बेटे भी बिगड़ गए। और कारण था यह ख्याल कि उनको बदलना है। तो उन लड़कों का भी अहंकार है अपना। वे कहते हैं, ठीक है तो बदल लो। कैसे बदलना है देखें। एक लड़का शराब पीने लगा, धर्म परिवर्तन किया, कहीं गलत जगह शादी की ; गाँधी को खबर लगी तो दुख हुआ। उस लड़के को खबर मिली कि गाँधी दुखी हुए हैं, तो वह हंसा और उसने कहा ऽअच्छा, तो वे अभी दुखी होते हैं। वे तो कहते थे कि सुख-दुख से बाहर हो गए हैं और मैं हिंदू धर्म छोड़कर कोई दूसरा धर्म पकड़ लिया तो दुख की क्या बात है? वे कहते हैं, अल्लाह-ईश्वर तेरे नाम। तो दुख की क्या बात है? कोई भी धर्म हुआ, जैसा हिंदू वैसा मुसलमान, वैसा कोई और। फर्क क्या है?

अच्छे बाप बेटों के बिगाड़ने के कारण तो बनते हैं, सुधारने के नहीं। क्योंकि जितना अहंकार उनका कहता है कि बदल दूँगा, उतना ही बेटे का अहंकार कहता है कि देखें कौन बदल सकता है। नहीं, कठोरता से कोई कभी बदला नहीं गया। इसलिए जो बदलने की सच में किसी के प्रति प्रेमपूर्ण आतुरता से उत्सुक होता है, इसलिए नहीं कि मैं उसे अपने विचार का बना लूं, बल्कि इसलिए कि उसके मार्ग पर जो पत्थर मुझे दिखायी देता है, मैं उस मार्ग से गुजरा हूं ; व्यर्थ ही उस पत्थर से वह चोट न खाए, उस पत्थर को हटाने की कोशिश करूं। वह बहुत करुणापूर्ण होगा। उसकी कठोरता दुनिया को कठोरता दिखाई पड़े, उसकी कठोरता करुणा का ही हिस्सा होगी।

करुणा अगर महान है तो कठोर भी हो सकती है। करुणा अगर महान है तो कठोर भी हो सकती है, लेकिन वह कठोरता कहीं भी नहीं होगी, एक कोने में भी नहीं हृदय के उसके। दुनिया उसको कहेगी कठोर। दुनिया कहे उससे कोई सवाल नहीं है। परीक्षण भीतर है कि मैं कठोर होने का रस तो नहीं ले रहा हूँ। कहीं यह विधि, नियम और निषेध जो मैं बना रहा हूँ कि उठो चार बजे सुबह, यह सिर्फ यह मजा तो नहीं ले रहा हूँ कि एक आदमी को सुबह चार बजे ठंड में उठवाने का एक मज़ा है, एक रस है। कहीं वह मज़ा तो नहीं ले रहा हूँ।

यह ध्यान में स्पष्ट हो तो करुणा बदलने की अदभुत शक्ति रखती है। लेकिन बदलने में मेरा रस नहीं है। और तब बदलने की उतनी आतुरता भी नहीं है, तब सिर्फ दूसरे के प्रति प्रेम प्रकट कर देना ही पर्याप्त है

उसे बदलने को। अगर करुणा से भरी आंखे हों, तो दूसरा आदमी उन आंखो को देखते तक बदल सकता है। करुणा से भरा हुआ हाथ हो, तो हाथ का इशारा और स्पर्श भी बदल सकता है। और कठोरता की तलवारें भी कुछ नहीं कर पाती हैं। आदमी बड़ी से बड़ी तलवार से बड़ा है, लेकिन आदमी छोटी से छोटी करुणा के सामने एकदम कमजोर हो जाता है।

ओशो

आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए उद्यमिता महत्वपूर्ण स्तंभः प्रो. नीलम ढांडा

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग सेंटर व वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार ऑनलाइन माध्यम से चलाए जा रहे 14 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के आठवें दिन संगोष्ठी का विषय उद्यमिता को बढ़ावा देने में इंटर्नशिप एवं अनुभवजन्य शिक्षण की भूमिका रहा। सत्र की अध्यक्षता प्रो नीलम ढांडा, अधिष्ठाता, वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग ने कहा कि आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए उद्यमिता एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। युवा लोग और विशेष रूप से छात्र संभावित उद्यमी हैं, जबकि शिक्षा क्षमताओं को बढावा देने और इरादों को आगे बढाने के लिए महत्वपूर्ण है ।इस सत्र की संयोजिका एवं संचालिका डॉ. मोनिका शर्मा, लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर विमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अध्यक्षा का संक्षिप्त परिचय दिया व धन्यवाद किया। पैनल चर्चा में अकादमिक, पाठ्येतर एवं संस्थागत प्रयासों के माध्यम से विद्यार्थियों में नवाचार की भावना कैसे विकसित की जाए, इस पर गहन विचार किया गया। सांयकालीन सत्र में हरियाणा स्कूल ऑफ बिजनेस, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हरियाणा से प्रो करमपाल नरवाल ने बताया कि अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा, प्रणाली, जीवंत लोकतंत्र और मांग, आत्मनिर्भर भारत के पाँच प्रमुख स्तंभ हैं। सत्र की अध्यक्षता महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, जगाधरी, हरियाणा से वाणिज्य विभाग के प्राध्यापक गौरव बरेजा की। कोर्स समन्वयक प्रो तेजिंदर शर्मा भी बीच बीच में सभी प्रतिभागियों से रूबरू होते रहे व सभी का उत्साहवर्धन करते रहे।

विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने दी सौगात
पौने दो करोड़ में बनने वाले सामुदायिक केंद्र का किया शिलान्यास

घरौंडा के फूरलक रोड पर बनाया जाएगा सामुदायिक केंद्र, वार्ड–1 और वार्ड–2 के लोगों को मिलेगा फायदा

गजब हरियाणा न्यूज/ अमित बंसल

घरौंडा । हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने घरौंडा के फूरलक रोड पर पौने दो करोड़ की लागत से बनने वाले सामुदायिक केंद्र का शिलान्यास करते हुए कहा कि हलके में जिस गति से विकास कार्य हो रहे हैं, इससे अगले कुछ सालों में घरौंडा हलके की सूरत बदल जाएगी। हलके में तरक्की की मजबूत नींव रखी जा चुकी है। इसका फायदा पूरे हलके की जनता को मिलेगा।

विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण गुरुवार को घरौंडा में फुरलक रोड पर सामुदायिक केंद्र का शिलान्यास करने के बाद जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। पौने दो करोड़ की लागत से बनने वाले कि इस सामुदायिक केंद्र से वार्ड एक और दो के लोगों को फायदा होगा। नगर पालिका घरौंडा द्वारा बनवाए जाने वाला यह सामुदायिक केंद्र दो मंजिला होगा, इसमें ऊपर व नीचे बड़ा हॉल, शौचालय, कक्ष और रसोई की सुविधा होगी। निर्माण कार्य एक साल में पूरा होने की उम्मीद है।

कल्याण ने कहा कि सामुदायिक केंद्र के लिए जमीन की प्रक्रिया पूरी करने में थोड़ा समय जरूर लगा लेकिन इसके बनने से वार्ड एक और दो के लोगों की पुरानी मांग पूरी होने जा रही है। इसके लिए उन्होंने वार्ड वासियों को बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि जब वे हलके से पहली बार विधायक बने तब लंबित विकास कार्यों की गठरी बहुत बड़ी हो चुकी थी। एक–एक करके इन कामों को पूरा कराया गया। अब पूरे हलके में तेज गति से विकास कार्य हो रहे हैं, जिनका परिणाम जमीनी स्तर पर नजर भी आ रहा है।

विकास कार्यों की सूची में दिन–प्रतिदिन दर्ज हो रहे उद्घाटन व शिलान्यास

विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने कहा कि विकास कार्यों की बात करें तो सर्वप्रथम पब्लिक हेल्थ सब डिवीजन को वापस लाया गया। घरौंडा शहर में लड़कियों का स्कूल, पार्कों और बस अड्डे का निर्माण कराया गया। इसके अलावा न केवल घरौंडा को उपमंडल का दर्जा दिलाया गया बल्कि हलके में 16 स्कूलों को सीनियर सेकेंडरी बनवाया गया, 40 नए पुल और 75 सड़कें बनवाई गईं। रेलवे से जमीन लेकर लाइन के नीचे रास्ता बनवाया गया जिससे 15 गांवों को फायदा पहुंचा है। इतना ही नहीं अवैध कॉलोनियों को अप्रूव्ड घोषित करवा कर उन में मूल सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई। नए अस्पतालों के साथ–साथ युवाओं के लिए आईटीआई बनवाई गई। एनसीसी अकैडमी और रिंग रोड का निर्माण कार्य जारी है। मेडिकल यूनिवर्सिटी इसी साल शुरू हो जाएगी। रैपिड रेल के लिए पानीपत और करनाल के बीच तीन स्टेशन मंजूर हो चुके हैं। विकास कार्यों की लंबी सूची है जिसमें हर दिन कोई न कोई उद्घाटन व शिलान्यास की उपलब्धि दर्ज हो रही है।

प्रोजेक्ट्स पूरा होने के बाद युवाओं को मिलेंगे रोजगार के नए अवसर

विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने कहा कि एक समय हलका विकास के मामले में काफी पिछड़ा हुआ था लेकिन अब तरक्की की पक्की नींव रखी जा चुकी है। बड़े प्रोजेक्ट्स पूरा होने के बाद युवाओं को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे। उन्होंने कहा कि हमें गांवों में पार्टीबाजी को बढ़ावा नहीं देना चाहिए, इससे गांव में विकास कार्य प्रभावित होते हैं। उन्होंने वर्तमान केंद्रीय मंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल का हलके की तरक्की में हर कदम पर साथ देने के लिए आभार जताया। साथ ही कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी भी हर समस्या के समाधान के लिए हर वक्त तत्पर रहते हैं। उन्होंने अनाज मंडी में आढती एसोसिएशन की ओर से आयोजित हवन यज्ञ में भाग लिया।

नगर पालिका अध्यक्ष हैप्पी लक गुप्ता ने शहर में कराए जा रहे विकास कार्यों को लेकर विधानसभा अध्यक्ष की सराहना की। उन्होंने कहा कि हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण शहर को सुन्दर बनाने और लोगों की अधिकाधिक मूल सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

इस अवसर पर एसडीएम राजेश सोनी, पालिका सचिव रवि प्रकाश शर्मा, मंडल महामंत्री सुरेंद्र, बलविंदर सिंहमार, रोहित, सुभाष आदि मौजूद रहे। हवन यज्ञ में प्रधान महेंद्र पसरीचा, पवन गुप्ता, जयकिशन गोयल, सतीश गोयल, सुशील गर्ग आदि ने आहूति डाली।

दिल्ली विश्वविद्यालय में एमए पाठ्यक्रम से पाकिस्तान, चीन, इस्लाम हटाने की तैयारी पर घमासान

दिल्ली विश्वविद्यालय में इन दिनों एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया है

दिल्ली । दिल्ली विश्वविद्यालय में इन दिनों एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। खबरें हैं कि एमए राजनीतिक विज्ञान के पाठ्यक्रम से पाकिस्तान, चीन, इस्लाम और राजनीतिक हिंसा जैसे विषयों को हटाया जा सकता है। यह कदम हालिया सुरक्षा चिंताओं और प्रशासनिक निर्देशों के चलते उठाया जा रहा है। लेकिन इस फैसले को लेकर विश्वविद्यालय के शिक्षकों में नाराजगी है। उनका कहना है कि ऐसे बदलावों से शैक्षणिक गहराई और वैश्विक समझ पर नकारात्मक असर पड़ेगा।

पहलगाम हमले के बाद पाठ्यक्रम की समीक्षा

22 अप्रैल को हुए पहलगाम आतंकी हमले के बाद, दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति योगेश सिंह ने विभागाध्यक्षों को निर्देश दिए कि पाठ्यक्रम में पाकिस्तान की अनावश्यक महिमा नहीं होनी चाहिए। इसी क्रम में 'पाकिस्तान एंड द वर्ल्ड', 'चीन की समकालीन भूमिका', 'इस्लाम और अंतरराष्ट्रीय संबंध', 'पाकिस्तान: राज्य और समाज' और 'धार्मिक राष्ट्रवाद और राजनीतिक हिंसा' जैसे विषय हटाए जा सकते हैं या अन्य विषयों से बदले जा सकते हैं।

इन बदलावों की समीक्षा विश्वविद्यालय की 'स्टैंडिंग कमेटी ऑन एकेडमिक मैटर्स' द्वारा की जा रही है। यदि ये विषय हटाए जाते हैं तो नए पाठ्यक्रम को पहले विभागीय कोर्स कमेटी, फिर पाठ्यक्रम पैनल और अंत में अकादमिक परिषद से मंजूरी लेनी होगी।

शिक्षकों ने दी शैक्षणिक स्वतंत्रता और प्रासंगिकता की दलील

इन प्रस्तावित बदलावों का विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने तीखा विरोध किया है। स्टैंडिंग कमेटी की सदस्य डॉ. मोनामी सिन्हा का कहना है कि पाकिस्तान का अध्ययन बेहद आवश्यक है। पाकिस्तान भारत की विदेश नीति में एक स्थायी चुनौती है। छात्रों को इसकी समझ होना जरूरी है, उन्होंने कहा। उन्होंने चीन को ग्लोबल साउथ का उभरता हुआ प्रमुख देश बताते हुए इसके अध्ययन को भी जरूरी बताया।

डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट (डीटीएफ) की सचिव अभा देव ने कहा कि ये बदलाव राजनीतिक प्रेरणा से लिए जा रहे हैं, न कि अकादमिक जरूरतों के आधार पर। पाठ्यक्रम में जबरन बदलाव करना विभागों की शैक्षणिक स्वायत्तता पर हमला है। यह बदलाव वैचारिक मान्यताओं पर आधारित हैं, न कि वैज्ञानिक अध्ययन या शिक्षण पद्धति पर, उन्होंने कहा। उनके अनुसार, इससे छात्रों की बौद्धिक क्षमताओं और विश्वविद्यालय की अकादमिक गुणवत्ता पर बुरा असर पड़ेगा।

शैक्षणिक परिषद के सदस्य मितुराज धूसिया ने भी विरोध जताया। उन्होंने कहा कि जटिल विषयों से भागने के बजाय हमें उनसे संवाद करना चाहिए। केवल असहज सवालों को हटाना समाधान नहीं है। हमें छात्रों को वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए बौद्धिक रूप से सक्षम बनाना चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी विभाग पर पाठ्यक्रम में बदलाव थोपना उचित नहीं है।

फिलहाल, अंतिम निर्णय नहीं हुआ है लेकिन इस विवाद ने देशभर में अकादमिक स्वायत्तता और विचारों की स्वतंत्रता को लेकर नई बहस छेड़ दी है।

युवा पत्रकार नवोदित को बनाया गया सरस्वती सेवा समिति का सदस्य
नियुक्ति पर जताया मुख्यमंत्री और सरस्वती हेरिटेज बोर्ड के वाइस चेयरमैन धूम्मन सिंह किरमिच का आभार

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र । कुरुक्षेत्र के युवा पत्रकार नवोदित को हरियाणा सरकार द्वारा गठित हरियाणा सरस्वती हेरिटेज डेवलपमेंट बोर्ड की सरस्वती सेवा समिति का सदस्य नियुक्त किया गया है। नवोदित पिछले 4 वर्षों से पत्रकारिता जगत से जुड़े होने के साथ–साथ प्रमुख समाजसेवी है। उनकी समाज सेवा की भावना को देखते हुए हरियाणा सरकार ने सरस्वती सेवा समिति का सदस्य बनाया है। उल्लेखनीय है कि इस बोर्ड के चेयरमैन हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी तथा वाइस चेयरमैन धूम्मन सिंह किरमिच है।

नवोदित ने अपनी नियुक्ति पर हरियाणा के मुख्यमंत्री एवं सरस्वती हेरिटेज डेवलपमेंट बोर्ड के चेयरमैन नायब सिंह सैनी तथा बोर्ड के वाइस चेयरमैन धूम्मन सिंह किरमिच का आभार व्यक्त किया।उन्होंने कहा की जिस आशा और विश्वास के साथ उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है, वे इसे पूरी निष्ठा और कर्तव्य परायणता के साथ निभाते हुए सरस्वती नदी के जीर्णोद्धार में योगदान देंगे।

उन्होंने कहा कि बोर्ड के वाइस चेयरमैन धूम्मन सिंह किरमिच के नेतृत्व में सरस्वती नदी के जीर्णोद्धार में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। जहां सरस्वती नदी की सफाई की जा रही है, इसी के साथ–साथ अवैध कब्जे को भी हटवाया जा रहा है।

उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि सरस्वती नदी और तीर्थ हमारी सांस्कृतिक विरासत और धरोहर है, इनको साफ–सुथरा रखने की जिम्मेदारी पूरे समाज की है। समाज को सरस्वती नदी को पवित्र एवं स्वच्छ रखने में अपना सहयोग देना चाहिए। नवोदित ने कहा कि बोर्ड की तरफ से सरस्वती नदी के किनारे बोर्ड द्वारा अनेक स्थानों पर भव्य घाट बनाए गए हैं। उन पर संध्याकालीन आरती की जाए और अधिक से अधिक लोगों को जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि सरस्वती सनातन परंपरा की धरोहर है, इसको संजोए रखना सब की जिम्मेदारी बनती है।

46 से ज्यादा विभागों द्वारा सुनी जाएंगी लोगों की समस्याएं: नेहा सिंह

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र, उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार प्रशासन द्वारा जिले में रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस रात्रि ठहराव में प्रशासन के अधिकारियों द्वारा आम नागरिकों की समस्याओं का समाधान किया जाएगा। उपायुक्त नेहा सिंह ने आज यहां जारी आदेशों में कहा कि उन्होंने कहा कि यह रात्रि ठहराव 30 जून 2025 को सायं 4 बजे से थानेसर खंड के गांव सुनेहडी खालसा के कम्यूनिटी सेंटर में किया जाएगा। अहम पहलू यह है कि इस रात्रि ठहराव में 46 से ज्यादा विभागों द्वारा लोगों की समस्याओं का समाधान किया जाएगा। इतना ही नहीं इस रात्रि ठहराव में पुलिस विभाग,अतिरिक्त उपायुक्त कुरुक्षेत्र, नगराधीश कुरुक्षेत्र, सचिव आरटीओ, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी, जिला राजस्व अधिकारी,महाप्रबन्धक हरियाणा राज्य परिवहन, जिला सिविज सर्जन कुरुक्षेत्र, डीईटीसी(सेल्स),कुरुक्षेत्र, डीईटीसी(एक्साईज)कुरुक्षेत्र, जिला खाद्य एवं पूर्ति नियंत्रक, कुरुक्षेत्र, डीआईओ एनआईसी कुरुक्षेत्र, वनमण्डल अधिकारी (क्षेत्रिय)कुरुक्षेत्र,एलडीएम पंजाब नैशनल बैंक कुरुक्षेत्र लोगों की समस्याओं का समाधान करेंगे।

राज्यमंत्री राजेश नागर, विधायक जगमोहन आनंद, ब्रह्म स्वरूप ब्रह्मचारी महाराज ने पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा के भतीजे सुधांशु सुधा के निधन पर जताया गहरा शोक

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र, हरियाणा के खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग राज्यमंत्री राजेश नागर, करनाल विधायक जगमोहन आनंद, ब्रह्म स्वरूप ब्रह्मचारी महाराज ने पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा के भतीजे सुधांशु सुधा के निधन पर गहरा शोक जताया है। उन्होंने शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है।

हरियाणा के खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्यमंत्री राजेश नागर ने अपने शोक संदेश में कहा कि दिवंगत व्यक्ति का निधन परिवार ही नहीं बल्कि समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है और इसे भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने शोक संतप्त परिवार को इस दुख की घड़ी में धैर्य और संबल प्रदान करने की कामना की है। हरियाणा के खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्यमंत्री राजेश नागर ने पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा, उनके भाई अशोक सुधा, नप की पूर्व अध्यक्षा उमा सुधा, पार्षद मुकुंद सुधा सहित परिवार के अन्य सदस्यों के साथ भी दुख व्यक्त किया है। शोक सभा में भाजपा जिला अध्यक्ष तिजेन्द्र सिंह गोल्डी,रविन्द्र सांगवान ने भी शोक व्यक्त किया है।

राष्ट्रीय खेल 2025 में नेटबॉल में स्वर्ण पदक जीतने पर स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कर्मचारी को किया सम्मानित

गजब हरियाणा न्यूज/गुरावा

गुरुग्राम । हरियाणा की स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्रीमती आरती सिंह राव ने उत्तराखंड में आयोजित राष्ट्रीय खेल 2025 में हरियाणा का प्रतिनिधित्व करते हुए नेटबॉल में स्वर्ण पदक जीतने वाले राज्य सरकार के कर्मचारी श्री कर्ण को सम्मानित किया है।

श्री कर्ण वर्तमान में स्वास्थ्य मंत्री के कार्यालय में कार्यरत हैं। उन्हें उनकी उत्कृष्ट खेल उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया। राज्य की खेल प्रतिभा में उनके योगदान की सराहना करते हुए मंत्री ने उन्हें प्रशंसा पत्र भेंट किया और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने श्री कर्ण की लगन और खेल भावना की सराहना करते हुए कहा कि उनकी इस उपलब्धि ने न केवल स्वास्थ्य विभाग बल्कि पूरे हरियाणा राज्य को गौरवान्वित किया है। उन्होंने खेलों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया और आशा व्यक्त की कि कर्ण की यह सफलता सार्वजनिक सेवा में कार्यरत अन्य कर्मचारियों को भी खेल क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने और समाज के सभी वर्ग को खेलों के प्रति जागरूक करने व अनुशासन की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कटिबद्ध है।

विधवा महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए 3 लाख रुपये का दिया जा है ऋण: नेहा सिंह

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र । उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि हरियाणा महिला विकास निगम द्वारा विधवा महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए व्यक्तिगत कारोबार स्थापित करने के लिए बैकों के माध्यम से 3 लाख रुपये तक के ऋण दिलवाने की योजना शुरू की है। इस योजना के तहत जिला कुरुक्षेत्र के लिये 40 केसों का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि स्कीम के अंतर्गत जिन महिलाओं की वार्षिक आय 3 लाख रुपए तक तथा आयु 18 से 60 वर्ष है, वो इस स्कीम की पात्र होगी, जिसमें कुल ऋण का 10 प्रतिशत हिस्सा महिला को स्वयं वहन करना होगा और शेष राशि बैंकों के माध्यम से दी जाएगी। उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि बैंक ऋण के ऊपर लगे ब्याज की प्रतिपूर्ति हरियाणा महिला विकास निगम द्वारा सब्सिडी के रूप में अदा की जाएगी। इसकी अधिकतम सीमा 50 हजार रुपए व अवधि 3 वर्ष जो भी पहले होगी। उन्होंने कहा कि इस राशि से महिलाएं विभिन्न क्रियाकलापों के लिए जैसे बुटीक, सिलाई-कढ़ाई, आटो, ई-रिक्शा, मसाला/आचार इकाइयों/ खाद्य प्रसंस्करण, कैरी बैग का निर्माण, बेकरी, रेडीमेंट्स गारमेंट्स, कंप्यूटर जांच वर्क्स शामिल है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा किसी भी अन्य कार्य जिसको महिलाएं करने में सक्षम हो, उन सभी कार्यों को ऋण देने से पूर्व ट्रेनिंग भी करवाई जाएगी, ताकि महिला को अपने कारोबार या लघु उद्योग स्थापित करने में कार्य कुशलता की कमी महसूस न हो। उन्होंने कहा कि अधिक जानकारी के लिये निगम के जिला कार्यालय हरियाणा महिला विकास निगम, कोठी न0 465/5, मदानो वाली गली कुरुक्षेत्र में व्यक्तिगत रूप से आ सकते हैं या फोन नंबर 01744-223658 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मिशन मोड में काम कर रही है प्रदेश सरकार: मुख्यमंत्री

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र /लाडवा । मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि वे लाडवा विधानसभा की जनता के कारण विधायक बने और आज मुख्यमंत्री के पद हैं। अब लाडवा का हर नागरिक मेरे परिवार का सदस्य है, मैंने सभी अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि वे जनता की समस्याओं को सुनकर तुरंत उनका समाधान करें। पिछले करीब 4 महीने में लाडवा विधानसभा में 110 करोड रुपए के विकास कार्य के काम चल रहे हैं।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बुधवार को कुरुक्षेत्र जिला के गांव किशनपुरा के सामुदायिक केंद्र और गिरदारपुर के गुरुद्वारा में ग्रामीणों के साथ सीधा संवाद कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रत्येक जिले में एक - एक ऐसे अस्पताल का निर्माण किया जाएगा जिसमें सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हो, ताकि प्रदेश की जनता को सभी प्रकार का इलाज सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध हो। 15 अगस्त को इन अस्पतालों का उद्घाटन किया जाएगा। अस्पतालों के अंदर एक कमेटी का गठन भी होगा, जो मरीज को रेफर करने का काम करेगी। सरकार भी चाहती है कि जनता को अच्छा इलाज मिले। उन्होंने कहा कि सरकार ने किसानों की चिंता करते हुए सभी फसलों को एमएसपी पर खरीदने का काम किया है। इसके अलावा भावांतर भरपाई योजना के तहत फसल के मूल्य के अंतर को पूरा करने का काम कर रही है। साथ ही गरीबों के लिए आवास उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की जा रही है। भाजपा सरकार हरियाणा प्रदेश में मिशन मोड में काम कर रही है।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने गांव किशनपुरा में सरपंच द्वारा रखी गई मांगों पर घोषणा करते हुए कहा कि उनकी सभी मांगों को पूरा करवाया जाएगा और उन्होंने गांव के विकास के लिए 21 लाख रुपए अलग से देने की घोषणा की। गांव में पानी निकासी की समस्या काफी गंभीर है, जिसको प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाएगा। उन्होंने गांव गिरदारपुर की सरपंच को गांव की समस्या व मांगों को लिखित में देने को कहा और साथ ही गांव के विकास के लिए 21लाख रुपए देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि यह कार्यक्रम हल्का वासियों को मिलने के लिए तय किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के लोगों ने उनको बहुत अधिक प्यार और सम्मान दिया। उसी सम्मान की बदौलत ही प्रदेश में तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार सत्ता में आई है। उन्होंने कहा कि वोटिंग के बाद पहली बार आपके गांव में पहुंचा हूं। सरकार बनाने में सहयोग करने पर गांव के सभी लोगों का धन्यवाद करता हूं।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि आज संविधान हत्या दिवस के 50 वर्ष पूरे हुए हैं। यह वो दिन है, जब 50 साल पहले इमरजेंसी घोषित की गई थी जो आजादी के बाद सबसे बड़ा और अंग्रेजों के बराबर का अत्याचार रहा है। हर व्यक्ति को भय बना हुआ था। करीब 1 लाख लोगों की जबरदस्ती नसबंदी कर दी गई थी। लोगों को मजबूरन अपने घरों से निकलकर ईख के खेतों में रहना पड़ा था। उन्होंने कहा कि आने वाली युवा पीढ़ी को इस तरह की घटनाओं के बारे में मालूम होना चाहिए। जब युवाओं को इतिहास का पता होगा तो वह दोबारा उस बुरे दौर को नहीं आने देंगे। इस मौके पर उपायुक्त नेहा सिंह, पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल, चेयरमेन श्री धर्मवीर मिर्जापुर सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

जहां हम हैं वहीं पर परमात्मा: महामंडलेश्वर

सृष्टि की उत्पत्ति प्रकाश और ध्वनि से होती है: स्वामी ज्ञाननाथ

कहा: जहां प्रकाश होता हैं वहां पर ध्वनि भी होती है यह विज्ञान का सूत्र है।

गजब हरियाणा न्यूज/राहुल

अम्बाला। परमश्रद्धेय संत शिरोमणी, दिव्य ज्ञान रत्न, श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर एडवोकेट स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज, गद्दीनशीन चेयरमैन, निराकारी जागृति मिशन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, संत सुरक्षा मिशन भारत, चेयरमैन, संत संवारनाथ चैरिटेबल ट्रस्ट बाहरी कुरुक्षेत्र ने रुहानी प्रवचनों के दौरान कहा कि यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है बल्कि एक हकीकत है और सोलह आने सच है कि अखिल ब्रह्मांड के रोम-रोम मे रमे हुए, रसे और बसे हुए एकरस, कण-कण मे विद्यमान ओत-प्रोत मालिकेकुल जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एवं सर्वाधार परमात्मा को मैने अपने सतगुरुदेव की अपार कृपा और परमात्मा के अनुग्रह से ब्रह्मज्ञान की योग युक्ति के माध्यम से सतगुरुदेव के आमने-सामने बैठकर पलभर मे खुली आंखों से देखा है और प्रियतम पिता परमात्मा कि दिव्य आवाज (शब्दधुन), अति सुरीले और मनमोहक कुदरती दिव्य संगीत को भी सुना है। अंतर्मुखी होकर हर समय पल-पल स्वास-स्वास पर मैं नित्यप्रति सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सबकुछ करने मे समरथ, सत्यम-शिवम-सुंदरम, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त स्वरूप, सत, चेतन और अक्षय आनंद, निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार, दिव्य ज्योति स्वरूप और दिव्य प्रकाश स्वरुप परमात्मा का दर्शन करता रहता हूं और दिव्य शब्दधुन को सुनता रहता हूं। आप भी दर्शन कर सकते है और दिव्य आवाज को सुन सकते है। महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ ने आगे कहा कि जहां हम हैं वहीं पर परमात्मा है। परमात्मा हमारा निज स्वरूप और निज नाम है, हमारा असली परिचय और पहचान है, हमारा मूल और अपना आप है। विज्ञान भी इस बात की गवाही देता है कि सृष्टि की उत्पत्ति प्रकाश और ध्वनि से होती है। जहां प्रकाश होता हैं वहां पर ध्वनि भी होती है यह विज्ञान का सूत्र है। ध्वनि और प्रकाश एक ही जगह रहते हैं। स्वामी जी ने कहा कि एकांत मे उपयुक्त स्थान पर बैठकर जहां संसार का शोरगुल ना हो एकाग्र चित होकर सुरत से दिव्य शब्दधुन (अनहद शब्द) को सुनना और नीरत से दिव्य ज्योति और दिव्य प्रकाश का दर्शन दीदार करना ही वास्तव मे असली भजन और सही भक्ति है। इसके इलावा बाकि सब निरर्थक बहसबाजी और लौकिक शब्दों का मकड़जाल है। इस दिव्य शब्दधुन को ध्यान मे उपयुक्त स्थान पर बैठकर सुनने से स्थूल विचार, स्थूल चिंतन, स्थूल जगत सूक्ष्म जगत में बदलना शुरु हो जाता है। परमात्मा सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म है, इस दिव्य ध्वनि के अभ्यास से सहज में हमारा संपर्क परमात्मा से जुड़ना शुरू हो

जाता है परमतत्व का अंगसंग होने का अनुभव होना शुरू हो जाता है। चेतना और ज्ञान का विस्तार होता है। साधक नर से नारायण की अवस्था को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है। संत शिरोमणी दिव्य ज्ञान रत्न महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज ने आहवान किया कि आइए निराकारी जागृति मिशन से जुड़िए क्योंकि निराकारी जागृति मिशन में साधक को आमने-सामने बैठाकर ब्रह्म ज्ञान की युक्ति से पल भर में परमात्मा का खुली आंखों से दर्शन दीदार कराया जाता है और आंखे बंद करके अंतर्मुखी होकर सूरत शब्द योग का अभ्यास करने की सहज और सटीक युक्ति समझाई जाती है।

28 जून से 18 जुलाई 2025 तक वय वंदना कार्ड के लिए किया जाएगा शिविर का आयोजन

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र, जिला सिविल सर्जन डा. सुखबीर सिंह ने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार के आदेशानुसार प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना कार्यक्रम के अंतर्गत सभी ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में 70 वर्ष व इससे अधिक आयु वाले लाभार्थियों के लिए 28 जून से 18 जुलाई 2025 तक वय वंदना कार्ड निःशुल्क बनाने के लिए शिविरों का आयोजन किया जाएगा।

जिला सिविल सर्जन डा. सुखबीर सिंह ने आज यहां जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना कार्यक्रम के अंतर्गत वय वंदना कार्ड योजना का लाभ जन-जन तक पहुंचाने के लिए ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में सीएचसी व पीएचसी केन्द्रों पर शेड्यूल बनाकर शिविर लगाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि 28 जून से 18 जुलाई तक लोक नायक जयप्रकाश अस्पताल में सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक और सायं 4 बजे से 6 बजे तक वय वंदना कार्ड निःशुल्क बनाएं जाएंगे। इसके अलावा सीडीएच शाहबाद, सीएचसी लाडवा, सीएचसी मथाना, सीएचसी झांसा, सीएचसी पिहोवा, सीएचसी बारना, सीएचसी बाबैन, सेक्टर 4 पॉलीक्लीनिक, यूपीएचसी केएनजी, पीएचसी पिपली में सुबह 9 बजे से सायं 3 बजे तक वय वंदना कार्ड निःशुल्क बनाने के लिए शिविर लगाए जाएंगे।

बटोत,जम्मू कश्मीर में गूँजा 'जय गुरुदेव, जय गुरु रविदास' का जयघोष समरसता और भक्ति का अप्रतिम संगम

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

जम्मू। 22 जून 2025 को बटोत की पवित्र भूमि शिरोमणि सतगुरु रविदास जी की भव्य शोभा यात्रा के साथ समरसता, भक्ति और अटूट विश्वास का अप्रतिम संगम बन गई। गद्दी नशीन डेरा स्वामी जगतगिरी आश्रम पठानकोट के प्रमुख, श्री श्री 108 स्वामी गुरदीप गिरी महाराज जी के दिव्य नेतृत्व में आयोजित इस अद्वितीय शोभा यात्रा ने लाखों श्रद्धालुओं का मन मोह लिया और बटोत को धार्मिक आस्था के एक नए शिखर पर पहुँचा दिया।

सुबह 10ः30 बजे डाक बंगला बटोत से शुरू हुई यह शोभा यात्रा जैसे ही मुख्य बाजारों से गुजरी, पूरा शहर %जय गुरुदेव, जय श्री गुरु रविदास% के जयघोष से गूँज उठा। पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली सहित देश के विभिन्न कोनों से उमड़े लाखों श्रद्धालु अपनी भक्ति और श्रद्धा का अद्भुत प्रदर्शन कर रहे थे। पारंपरिक वेशभूषा में सजे, हाथों में झंडे और बैनर लिए श्रद्धालु शिरोमणि सतगुरु रविदास जी की शिक्षाओं और संदेशों को उजागर करने वाले नारे लगा रहे थे। हर चेहरे पर गुरु महाराज के प्रति अगाध प्रेम और समर्पण स्पष्ट झलक रहा था, जिसमें युवा, बुजुर्ग और महिलाएँ सभी समान उत्साह के साथ शामिल थे।

भक्ति का सैलाब और स्वामी जी का अमृत संदेश

लगभग 3 घंटे के भक्तिपूर्ण सफर के बाद, शोभा यात्रा दोपहर 1 बजे शिरोमणि सतगुरु रविदास मंदिर बगुनाला पहुँची, जहाँ पहुँचते ही वातावरण और भी भक्तिमय हो गया। यात्रा के समापन पर, स्वामी गुरदीप गिरी महाराज जी ने अपने अमृतमय वचनों से श्रद्धालुओं को निहाल किया। उन्होंने शिरोमणि सतगुरु रविदास जी की कालजयी शिक्षाओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, 卐शिरोमणि सतगुरु रविदास जी का संदेश समरसता, प्रेम और भाईचारे का है, जिसे हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।卐 स्वामी जी ने जोर देकर कहा कि गुरु रविदास जी ने समाज से भेदभाव मिटाकर समानता और न्याय पर आधारित एक समाज की परिकल्पना की थी, और उनके दिखाए मार्ग पर चलकर ही हम एक सुदृढ़ और शांतिपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं।

एक धार्मिक आयोजन से बढ़कर - एकता और प्रेरणा का प्रतीक

यह शोभा यात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान मात्र नहीं थी, बल्कि यह एकजुटता, सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक सद्भाव का जीवंत प्रतीक बन गई। विभिन्न राज्यों और पृष्ठभूमियों से आए श्रद्धालुओं ने अपनी आस्था के साथ मिलकर एक ऐसी अदृश्य डोर का निर्माण किया, जिसने समाज में सामंजस्य और सहयोग की भावना को प्रबल किया। इस भव्य आयोजन ने बटोत के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को और भी सुदृढ़ किया, और यह साबित कर दिया कि आस्था और विश्वास हमें एक साथ ला सकते हैं।

सुरक्षा और व्यवस्था में सराहनीय सहयोग

इस भव्य और विशाल आयोजन को सफल बनाने में जम्मू-कश्मीर पुलिस और अर्ध सेना बल का सहयोग अत्यंत सराहनीय रहा। सैनिक चप्पे चप्पे पर तैनाती के साथ निगरानी कर रहे थे। उनकी कुशल व्यवस्था और सुरक्षा के कारण ही लाखों श्रद्धालुओं ने बिना किसी बाधा के इस शोभा यात्रा में भाग लिया, जिसकी हर किसी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

बटोत में आयोजित इस शोभा यात्रा ने सिर्फ भक्ति का जश्न नहीं मनाया, बल्कि यह प्रेरणा का एक अक्षय स्रोत भी बनी। इसने सभी के दिलों में एक अमिट छाप छोड़ी, विश्वास और समर्पण की भावना को जागृत किया और यह संदेश दिया कि सतगुरु रविदास जी के आदर्शों पर चलकर ही हम एक बेहतर, अधिक समतावादी और प्रेमपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं। यह आयोजन निश्चित रूप से आने वाले वर्षों तक बटोत के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में याद किया जाएगा।

सरकारी कर्मचारियों और उनके परिजनों को दिया बड़ा तोहफा

हरियाणा के सीएम नायब सैनी ने किया ऐलान

मृतक कर्मचारियों के परिवारों को दो साल तक आवास सुविधा

गजब हरियाणा न्यूज/सुदेश

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सरकारी कर्मचारियों और उनके परिवारों के लिए 2 बड़े फैसलों की घोषणा की है। इन फैसलों से सरकारी कर्मचारियों को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा मिलेगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि हरियाणा कैबिनेट ने हरियाणा सिविल सर्विसेज नियम, 2016 में बदलाव को मंजूरी दे दी है। इसके तहत अगर किसी सरकारी कर्मचारी की नौकरी के दौरान मृत्यु हो जाती है, तो उनके परिवार को 2 साल तक आवास सुविधा सुनिश्चित की गई है।

परिवार को दो साल तक मकान की सुविधा

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा, मंत्रिमंडल ने हरियाणा सिविल सेवा, नियम 2016 में संशोधन को मंजूरी दे दी है। मृतक कर्मचारी के परिवार के लिए दो साल तक आवास सुविधा सुनिश्चित की गई है। सेवा के दौरान किसी सरकारी कर्मचारी की मृत्यु होने पर, मृतक के परिवार को दो साल की अवधि के लिए आवास भत्ता मिलेगा। इसके अलावा, परिवार सामान्य लाइसेंस शुल्क का भुगतान करके 2 साल तक सरकारी आवास को बरकरार रख सकता है। सरकार का यह कदम उन परिवारों के लिए बड़ी राहत लेकर आएगा, जो अपनों को खोने के बाद आर्थिक तंगी का सामना करते हैं।

यूनिफाइड पेंशन स्कीम का तोहफा

हरियाणा सरकार ने कर्मचारियों के लिए एक नई पेंशन योजना भी शुरू की है। मुख्यमंत्री सैनी ने बताया कि कैबिनेट ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) को मंजूरी दी है, जो 1 अगस्त 2025 से लागू होगी। यह योजना उन कर्मचारियों के लिए है, जो 1 जनवरी 2006 या उसके बाद नौकरी में शामिल हुए हैं और न्यू पेंशन स्कीम (एनपीएस) का हिस्सा हैं। इस योजना से करीब 2 लाख से ज्यादा कर्मचारियों को फायदा होगा। मुख्यमंत्री ने कहा, यूपीएस के तहत कर्मचारी को 25 साल की नौकरी पूरी करने पर रिटायरमेंट के पहले 12 महीनों की औसत बेसिक सैलरी का 50त्न पेंशन के रूप में मिलेगा। अगर कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है, तो उनका परिवार पेंशन पाने का हकदार होगा।

कर्मचारियों को मिलेगा विकल्प

मुख्यमंत्री सैनी ने आगे कहा, इसके अलावा, 10 साल या उससे ज्यादा नौकरी करने वाले कर्मचारियों को कम से कम 10,000 रुपये की गारंटीड

पेंशन हर महीने मिलेगी। उन्होंने यह भी साफ किया कि कर्मचारियों को अपनी मर्जी से यूपीएस या मौजूदा एनपीएस में से किसी एक को चुनने की आजादी होगी। यह लचीलापन कर्मचारियों को अपनी जरूरतों के हिसाब से फैसला लेने में मदद करेगा। माना जा रहा है कि सरकार के ये फैसले हरियाणा के सरकारी कर्मचारियों और उनके परिवारों को राहत देंगे।

गुलजार सिंह बने विकास परिषद के प्रदेश सचिव

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं जनजाति विकास परिषद, नई दिल्ली के द्वारा हरियाणा पुलिस से सेवानिवृत इंस्पेक्टर गुलजार सिंह को प्रदेश सचिव के पद पर नियुक्त किया गया है। इस प्रतिष्ठित पद पर नियुक्ति के बाद गुलजार सिंह ने अपने संकल्प को स्पष्ट किया, कि वह पूरी ईमानदारी और सत्य निष्ठा के साथ कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य प्रदेश के समाज के लोगों को अधिक से अधिक जोड़ना और समाज के हित में बिना किसी रुकावट के कार्य करना होगा। गुलजार सिंह ने शीर्ष नेतृत्व को आश्वस्त करते हुए कहा कि वे समाज की हर छोटी से छोटी मांग को

सरकार और आयोग के समक्ष उठाएंगे ताकि समाज के विकास में योगदान दिया जा सके। गुलजार सिंह ने अपने इस नए दायित्व के लिए प्रदेश अध्यक्ष चित्र कुमार और समस्त केंद्र एवं प्रदेश के शीर्ष नेताओं का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने उन पर विश्वास जताया।

इग्नू ने लांच किया बीए होम साइंस पाठ्यक्रम: डॉ धर्मपाल

गजब हरियाणा न्यूज/ नरेंद्र धूमसी

करनाल । इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक डॉ धर्म पाल ने बताया की इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने 12वीं पास छात्रों को एक और अन्य मौका देते हुए नया कोर्स लॉन्च किया है। इग्नू ने जुलाई सेशन 2025 से बीए होम साइंस कार्यक्रम की शुरुआत की है। यह कार्यक्रम चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (एफवाईयुपी) के तहत ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) मोड में उपलब्ध होगा। इग्नू के बीए होम साइंस कोर्स के लिए 12वीं पास छात्र आवेदन कर सकते हैं। इसके अलावा ही जो स्टूडेंट्स हायर एजुकेशन के साथ-साथ किसी व्यावसायिक क्षेत्र में भी करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए भी यह बेहतर विकल्प हो सकता है। इस कोर्स का मीडियम हिंदी और इंग्लिश होगा।

उन्होने बताया की इग्नू के इस बीए प्रोग्राम को यूजीसी के करिकुलम और क्रेडिट फ्रेमवर्क के अनुसार तैयार किया गया है और यह नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के दिशा-निर्देशों पर आधारित है। इस पाठ्यक्रम की अवधि वैसे तो तीन साल की होगी, लेकिन छात्र इसे अधिकतम छह साल में कंप्लीट कर सकते हैं। परीक्षा हर साल एक बार आयोजित की जाएगी। स्टूडेंट्स को इस कोर्स में ह्यूमन डेवलपमेंट एंड फैमिली स्टडीज, कम्युनिटी मैनेजमेंट रिसोर्सेज, फूड एंड न्यूट्रीशन, एक्सटेंशन एंड कम्युनिकेशन और फैब्रिक एंड अपेरल साइंस जैसे विषयों के बारे में पढ़ाया जाएगा। इस पाठ्यक्रम में थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों शामिल है, जिसमें छात्र 120 क्रेडिट पूरे करेंगे। इस पाठ्यक्रम का स्टडी मटेरियल प्रिंट और डिजिटल दोनों फॉर्मेट में उपलब्ध करवाया जाएगा। इग्नू के बीए होम साइंस कोर्स की फीस 5000 रुपये सालाना है, जिसमें रजिस्ट्रेशन और डेवलपमेंट फीस भी शामिल है। इस पाठ्यक्रम में फ्लेक्सिबिलिटी बढ़ाने के लिए अलग-अलग साल के बाद एग्जिट ऑप्शन भी दिए गए हैं, जैसे फर्स्ट ईयर के बाद अंडरग्रेजुएट सर्टिफिकेट इन होम साइंस मिलेगा, सेकंड ईयर के बाद अंडरग्रेजुएट डिप्लोमा इन होम साइंस मिलेगा, थर्ड ईयर के बाद बीए (होम साइंस) और फोर्थ ईयर के बाद बीए ऑनर्स (होम साइंस) की डिग्री विद्यार्थियों को मिलेगी इसके साथ-साथ यह पाठ्यक्रम करने के बाद बाल विकास ,शिक्षा ,खाद्य और कपड़ा क्षेत्रों में गुणवत्ता नियंत्रण ,विषय वस्तु विशेषज्ञ, महिला एवं बाल विकास और समाज कल्याण विभाग और गैर-सरकारी संगठनों में नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे इच्छुक विद्यार्थी पाठ्यक्रम के बारे में और ज्यादा जानकारी हासिल करने के लिए इग्नू के एडमिशन लिंक - आई जी एन ओ यू एडमिशन डॉट समर्थ डॉट ईडीयू डॉट इन पर विजिट कर सकते हैं, जिसके लिए अंतिम तिथि 15 जुलाई है।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा ढिंगरा प्रिंटिंग प्रैस, अग्रसैन चौंक, मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं0 890 पी, सैक्टर-4, अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (91382-03233) Registration Namber : HAR/HIN/2018/77311